जीवन की परिधि

कविता-संग्रह

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-93-90580-74-3

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 111 - ए.जी-एफ, आनन्द पर्वत, इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110005

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

मूल्य : 220.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2021 **© विमला रावर**

मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

Book Name : JIVAN KI PARIDHI
by BIMLA RAWAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी अभिव्यक्ति

सहृदय पाठकगण मेरा नवीनतम काव्य-संग्रह **''जीवन की परिधि''** आपकी सेवा में समर्पित है। इन्सान की छोटी-सी ज़िन्दगी एक छलावे की तरह उसे छलती रहती है, बिल्कुल एक बहुरूपिये की भांति बार-बार सताती है, हँसाती है, रुलाती है, और जलाती है। लेकिन हर इन्सान अपने जीवन को पूरी तरह जीना चाहता है। तो क्यों न सौ फीसदी जीने के लिए हम ज़िन्दगी को अपने ढंग से जीने का पूर्ण प्रयास करें, और जीवन की नकारात्मक सोच को दूर ....बहुत दूर भेजकर, सकारात्मक सोच को आपनायें। ज़िन्दगी के हर लम्हे में से ख़ुशी ढूँढ़ लें, जीवन के हर लम्हे की इस रस्साकशी से अमृत को सींच लेने का नाम ही ज़िन्दगी है। मैंने अपने जीवन में देखे हुए, जिये हुए, आसपास के रिश्ते-नातों के, विशेष रूप से अपने विध्यालथयों के, अपने घर में काम करने आने वाली महिलाओं और बच्चों के हालातों के कष्टों को बड़े दिल से महसूस किया है, परखा और देखा है, उसके बाद दिल से जो दर्द के सोते फूटे, वे सब मेरे मन से निकली रोज कि सीधी-सरल भाषा में कागज़ पर दर्ज़ होते गए। हृदय जो अनुभव करता है, मैं उसे कलमबद्ध करती जाती हूँ, किन्तु कविता के अंत में मेरा यही प्रयास होता है कि दुखभरी कविता भी सार्थकता का संदेश दे कि शाम के बाद सुबह भी आएगी, रात के गहन अँधियारे के बाद सुबह का चमकीला सूरज उजियारा अवश्य लाएगा, हिम्मत हारने की जगह, हम सभी को धैर्य से इंतजार करना चाहिए।

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरी कविताओं से आपका परिचय मेरे बहुत प्रिय, प्रसिद्ध लेखक, कविता, कहानी, उपन्यास आदि विधाओं की एक-एक पंक्ति में, एक-एक शब्द में गागर में सागर भरने वाले, मंटो की रवायत को आगे बढ़ाने वाले, मेरे प्रिय बंधु केदारनाथ शब्द मसीहा करवा रहे हैं। उनकी लिखी लघुकथाओं के संग्रह 'जिन्दा है मन्टो', 'मंटो के साथ', 'मंटो के बाद', 'मंटो के पीछे', 'मंटो न मरब' में एक-एक पात्र का चरित्र, समाज की वर्तमान स्थिति को सुधारने वाले महामंत्र से ओत-प्रोत है। मेरे प्रत्येक काव्य-संग्रह की प्रत्येक कविता केदार जी के दिये परिचय की प्रतीक्षा

करती है। आपको आपकी इस दीदी का आशीर्वाद एवं शुभकामनायें, ईश्वर आपके जीवन में सदैव सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि खुशियाँ और सफलता प्रदान करे। मैं अपनी पुस्तक के प्रकाशक संजय शाफ़ी को हृदय से आशीर्वाद देती हूँ।

सहृदय पाठकवर्ग मेरा मंतव्य, अनुभूति, कामना, याचना क्या है ? सही अर्थों में इसका मूल्यांकन तो आप ही करेंगे। मेरी यह कृति आपके सम्मुख है। आपके निर्णय की, आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

बिमला रावर सक्सेना
नई दिल्ली

जीवन की परिधि

कविता मित्र है, सहेली है, और जीवन का मन्त्र भी। यह तो लेखक और पाठक दोनों के मध्य का एक शब्द-सेतु है। शब्दों के माध्यम से परिस्थियों की कथा है। कोई दो पंक्तियों के शे'र में कहता है, कोई चार पंक्तियों के मुक्तक में, तो कोई लम्बी कविता के रूप में। आजकल सरलता की सृष्टी से और विधा नियमों की दुरुहता के कारण मुक्त कविता का बहुत प्रचलन है।

मुक्त कविता उन्मुक्त होकर जब विचरती है, तब छन्द, विधा, आकार जैसे समस्त प्रकार को यह स्वतः ही लाँघ जाती है। किसी एक विधा में बन्धकर कविता की मुखरता का सौन्दर्य अनुपम तो होता ही है, पर किसी सुनिश्चित की गयी विधा के आवरण से निकलकर काव्य ने जब-जब नवीन आकार ग्रहण किया है, तब-तब वह कविता को एक नूतन परिभाषा से गढ़ गयी है। अपने इस मुक्त रूप में भी कविता तब तक 'अ-कविता' नहीं होती, जब तक वह अपने मूल शाश्वत गुणधर्म को पोषित करती रहती है। और कविता को काव्य बनाये रखने के लिये, उसके मूल गुणधर्म का अनुपालन करते रहना नितान्त आवश्यक एवं अनिवार्य है। कविता का यह मूल शाश्वत गुणधर्म है, उसकी स्वयं की लयबद्धता। कवि द्वारा सृजित लय-सुर-ताल से च्युत रचना कविता की श्रेणी से निकलकर स्वतः ही गद्य में परिवर्तित हो जाती है।

महाकवि निराला ने जब छन्द मुक्त कविता लिखी, तब उसका पृथक संगीत भी उन्होंने रचा। ऐसा ही महादेवी वर्मा, पन्त, बच्चन तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों ने भी किया है। प्रस्तुत कवितायें भी अधिकाँश उसी मुक्त काव्य के उन्मुक्त भाव के धरातल पर रची गयी हैं, जिसके प्रवाह में गति की अपनी एक विशेष लयबद्धता आप स्वतः ही इसका वाचन करते हुये अनुभूत करेंगे।

कवयित्री बिमला रावर सक्सेना अपने शैशवकाल से ही साहित्य से जुड़ी रही हैं। एक बेटी, एक अध्यापिका, एक पत्नी, एक माँ और एक स्त्री जैसे सभी रूपों को देखते हुए जीवन के आठवें दशक में भी क्रियाशील हैं

अपने रचनाकर्म में। उनकी कविताओं में सरल, सहज और परिस्थिजन्य भाव देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाओं में सहजता से मनोभावों को प्रस्तुत करने का प्रयास साफ़ सृष्टिगोचर होता है।

घोल-घोलकर दुःख पी जाता
घुल-घुलकर जीने वाला
मर-मर कर जीता रहता है
जी-जीकर मरने वाला
कैसी घुटन, चुभन यह कैसी
बातें हैं अहसासों की
अहसासों को पढ़ सकता है
कोई पिघले दिल वाला

इन पंक्तियों को पढ़ते हुए कविश्रेष्ठ हरिवंश राय बच्चन की स्मृति हो आती है और उनकी अमर रचना मधुशाला की भी। जीवन का विष और अमृत दोनों ही हम एक साथ आचमन कर रहे हैं। कवयित्री बिमला जी ने अपनी कविता 'दिलवाला' में इसका वर्णन किया है। जीवन की दुरुहता को हमारे सामने रखा है, और जीवन की कड़वी सच्चा को भी। इसलिए उनकी रचनायें पाठक को पढ़ने पर मजबूर करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

जीवन में जब कोई दूसरा मनभावन मीत प्रवेश करता है, तब मन स्वतः ही अनुभव करता है कि :-

सुना रहा है अमृत गीता
मेरी वीणा के तारों में
भर जाता है रोज रंग जो
सूरज चाँद सितारों में
उन साँसों की सरगम समझे
मन वीणा को झंकृत कर दे
जीवन में अमृत रस भर दे
कोई सुरमय दिल वाला

यह प्रणय गीत-सा लगता है, जब जीवन प्रफुल्लित हो जाता है, किसी के मिलने से जीवन सार्थक होकर पुष्पित, पल्लवित होता है। दो जन मिलकर तीसरे को इस दुनिया में लाते हैं, यही तो प्रकृति का प्रकटीकरण है। और यही जीवन का मानकीकरण भी, अन्यथा एकाकी जीने का क्या मजा है कोई।

'उपेक्षिता का प्रश्न' कविता जब नारी के मन से निकलती है, तब जाकर उन परिस्थियों का और गहन प्रेम का आभास होता है, जिसमें कोई भी अपने जीवन को डुबो देना चाहता है। विछोह, विरह, तिरस्कार ये सब प्रेम की अनुपस्थिति से ही जन्में हैं, और इसी से जन्मे हैं स्त्री के प्रश्न भी। हर स्त्री ही तो कामना करती है :-

मैं तो कोरा कागज़ थी
तुमने उस पर
अपने मन की रचना
गढ़ने का प्रयास क्यों नहीं किया
यदि करते
तो शायद यह जीवन कुछ और होता
और मैं
तुम्हारे दिल के अन्दर प्रवेश कर
तुम्हारी आत्मा में समा जाती
और यह उपेक्षिता
सीता बनकर
अपने राम में रम जाती

हर एक की कामना होती है कि ज़िन्दगी उसे थोड़ा और वक़्त दे। लेकिन यह ज़िन्दगी बहुत ही निष्ठुर है, क्योंकि यह भी समय और परिस्थियों से बंधी है। किन्तु मन तो आज़ाद पंछी है, उसे संघर्ष से गुजरना ही पड़ता है, क्योंकि जीवन में मनचाहा तो हमेशा घटित नहीं होता है। जीवन में यही संघर्ष हमारी प्रेरणा भी है, और हमारी जीत अथवा हार भी। हर कोई अपनी ज़िन्दगी से यही तो गुजारिश कर रहा है कि :-

टूट न जाये मन की वीणा मेरी
मेरी वीणा के तार बजने दे
मेरे जीवन की सूनी महफ़िल को
दो घडी के लिए तो सजने दे

जीवन की इस नदी को एक दिन समंदर में मिलकर अपने अस्तित्व को सदैव के लिए विलीन करना ही है, लेकिन स्वत्व की पहचान की लड़ाई ही तो जीवन का दूसरा नाम है। और इस युद्ध के बीच शील,संयम,साहस, सौभाग्य, सत्कर्म हमारे साधन हैं, अस्त्र और शस्त्र हैं, जिनके बलबूते हम इस जीवन के युद्ध में एक योद्धा की तरह चुनौतियों से दो-चार होने का दम भरते हैं। कितना भी हम जी लें मगर हम संतुष्ट नहीं होते, कुछ कामनायें, अभिलाषायें अतृप्त और अधूरी रह ही जाती हैं। इस अंतिम सत्य को कवयित्री अपनी रचना 'सागर में मिल जाती लहरें' में इस प्रकार हमारे सामने रखती हैं :-

कितने राग सुनायें लहरें
कितने फाग दिखायें लहरें
कितने राज़ छुपाये दिल में
सागर में मिल जातीं लहरें

उनकी रचनाओं में हमारे सैनिक, हमारे कलम के सिपाही, समाज की चुनौतियां, हमारा प्राकृतिक वातावरण, मौसम,पशु-पक्षी, राजनीति, समय की मांग, जीवन का अध्यात्म, प्रेम, विरह, कामयाबी, दर्द, देश, जीवन के लक्ष्य, हार और जीवन के जिवंत सूत्र हमें देखने को मिलते हैं। जीवन के हर रंग पर उनकी क़लम कुछ कहती है।

जीवन की एक बड़ी सीख है आत्ममंथन, जो हमें हमारा ही गुरु, मार्गदर्शक और सहायक बनाती है। इस दृष्टी का जैसे-जैसे मनुष्य में विकास होता है, मनुष्य का जीवन सरल और सुगम होता जाता है। इसके लिए मनुष्य को स्वयं ही अपनी गलतियों का निरिक्षण, पछतावा और सुधार की आवश्यकता होती है। मनुष्य स्वयं के जीवन सफ़र का स्वयं ही प्रकाश

स्तम्भ बन सकता है। ऐसा ही कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी की कविता भी समर्थन करती है:-

काश! हमने सोचकर बोला होता
काश! हमने होश न खोया होता
यदि यह सच्चा पछतावा होता है
तो भविष्य में हमें अगली गलती से बचा लेता है
यदि ऐसा हो जाये तो जीवन कितना सुखमय हो जाये
सच्चे दिल से चलें तो जीवन उल्लासमय हो जाये
हमारी धरा करुणामय हो जाये
मानव की मानवता तेजोमय हो जाये

जीवन के हर पहलू से गुजरते हुए लिखी गई ये सभी कवितायें एक बेहतर जीवन की कामना करती हैं। और काव्य-संग्रह के नाम "जीवन की परिधि" को पूरी तरह से सत्य सिद्ध करती हैं।

मैं अपनी बड़ी दीदी, दीदी माँ बिमला रावर सक्सेना जी को इस काव्य-संकलन के लिए अपने दिल की असीम गहराइयों से शुभकामनायें देता हूँ, और कामना करता हूँ कि वे स्वस्थ, सक्रीय और सृजनशील रहते हुए साहित्य और समाज को समृद्ध करती रहें।

भवतु सब्ब मंगलम।

केदार नाथ 'शब्द मसीहा
नई दिल्ली

अनुक्रमांक

सुपथ दो सुविवेक दो माँ..... 19
दिलवाला..... 20
उपेक्षिता का प्रश्न..... 23
चंद शे'र..... 24
जीवन की परिधि..... 25
ज़रा सँवरने दे..... 26
मेरी कामना..... 27
ज़िन्दगी में..... 28
कितने अँधियारे..... 29
सागर में मिल जातीं लहरें..... 30
दुखियारे बादल..... 31
तेरे जाने के बाद..... 32
न रोक सके..... 33
क़लम बड़ी तलवार से..... 34
सैनिक के चरणों में..... 35
शहीदों की ख़ातिर..... 36
हमें न बाँटो..... 37
पुकार..... 38
पानी की तरह..... 39
चिलबिली लहरें..... 40
जीवन के नाते..... 41
खो गई डगर..... 42
दर्द के फ़साने..... 43
ज़िन्दगी से ज़िन्दगी क्यों..... 44
इक हूक..... 45
कोई किरण..... 46

उठो साथियो..... 47
लगावट..... 48
मेरी मंज़िल कहाँ खो गई..... 49
अपने रूठने न पायें..... 50
याद करें जब लोग हमें..... 51
मस्तक पर है मुकुट हिमालय..... 52
ऐसा संयोग..... 53
भारत के वीर..... 54
वृक्षों की माया..... 55
मातृभूमि-जन्मभूमि..... 56
चरण धोयें भारत के..... 57
कैसी वह महारानी थी..... 58
आ पहुँचे काले बादल..... 59
एक छोटा-सा शब्द : वक़्त..... 60
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद..... 61
फूल की महक और इन्सानियत..... 62
झुर्रियों की झाड़ी..... 63
यह प्रवचन नहीं..... 64
यह खुरदरा इतिहास..... 65
सूने पलों में भी..... 66
राहें मिलती रहेंगी..... 67
सच्चा पछतावा..... 68
अंजाम-ए-हिन्दोस्ताँ क्या होगा..... 69
आये न आये..... 70
बरसी कारी बदरिया..... 71
विस्तृत महासागर..... 72
ख़ुदा क़िस्मत को बदल दे..... 73
अब क्या रहा है ज़िन्दगी में..... 74

मामा का गाँव..... 75
हम ख़ुद के हाथों छले गये..... 76
पथ जीवन धारा का..... 77
नये ख़्वाब..... 78
आँखों में छा गई निंदिया..... 79
मिलकर जग जीत लिया..... 80
मिली जीवन रेखा..... 81
न शिकायत कोई..... 82
ख़ुद से ही थक गये हम..... 83
मुँह सी लिया..... 84
दर्द-ए-दिल का हाल..... 85
मैं तो मुरली हूँ..... 86
रतजगे-सा क्षण..... 87
शायद वह आये..... 88
तू ही तू है..... 89
मेरा सवेरा..... 90
प्राणहीन रिश्ते..... 91
बढ़ी या घट रही है ज़िन्दगी..... 92
कचरा..... 93
देखो दृष्टिपथ विस्तृत करके..... 94
जीवन की दौड़..... 95
दानी काले मेघा..... 96
चलते-चलते..... 97
जीवन और संघर्ष..... 98
अबला बन जा तू सबला..... 99
सब्र रखो..... 100
साँझ के धुँधलके में..... 101
वक़्त का मरहम..... 102

माँ की माया..... 103
तुम कहो कैसे जियें..... 104
मौन संवाद बन गया..... 105
नियति का रुख़ मोड़ें..... 106
अव्यक्त अभिव्यक्ति..... 107
माँ क्या भूल हुई मुझसे..... 108
चाँदनी रातें - काली रातें..... 110
अतिथि वर्षा रानी..... 111
राष्ट्रगान हम सबका जीवन..... 112
जीनव खिल गया..... 113
जो थे अपने..... 114
सपनों की माला..... 115
विश्वसनीय आधार..... 116
ज़िन्दगी कितनी अनजानी है..... 117
किसको सुनायें हाल-ए-दिल..... 118
रहीम का यह दोहा..... 119
एक निर्जीव सड़क..... 120
क़लम की आग..... 122
ज़िन्दगी कितनी अजीब होती है..... 125
छूट गया हाथों से दामन..... 127
वादे तोड़ते चलो..... 128
ठोकर मिली ज़माने से..... 129
मेरी गौरैया आ.. आ.. आ..... 130
बादल बिजली आये संग-संग..... 131
बेरंग हैं नज़ारे..... 132
हम दिल के अमीर हैं..... 133
हमको प्रेम का दीप जलाना है..... 134
सबको एक तार में पिरोया..... 135

अन्तिम दरवाज़ा..... 136
धरती पर आकर वो कूदीं..... 137
दिलबोले रिश्ते..... 138

सुपथ दो सुविवेक दो माँ

शक्ति दो माँ भक्ति दो माँ
बुद्धि बल दो शारदे माँ
कर्म पथ सच्चा सरल दो
ज्ञान दो विज्ञान दो माँ

वीणा वादिनी ज्ञानदायिनी
मुक्ति दो अज्ञान से माँ
हँसवाहिनी वीणापाणि
छन्द लय स्वर दान दो माँ

गीत दो संगीत दो माँ
कला और साहित्य दो माँ
लक्ष्य पूरे कर सकें हम
आत्मा का विश्वास दो माँ

हो तुम्हारी कृपा दृष्टि
कवि हों कालीदास जैसे
रामचरित मानस रचें जो
भक्त तुलसीदास जैसे

है मेरी करबद्ध विनती
बुद्धि का वरदान दो माँ
सुपथ दो सुविवेक दो
सुविचार दो हे शारदे माँ

ooo

दिलवाला

दिल में घाव लगाते खुद ही
खुद ही उनको सीते हैं
ज़िन्दा रह कर रोज़-रोज़ हम
जीवन का विष पीते हैं
कैसा है जीवन मानव का
दिल में क्या-क्या छुपा हुआ
दिल में ज़ख़्म छिपा कर जीना
दिल जाने या दिलवाला

घोल-घोल कर दुख पी जाता
घुल-घुल कर जीने वाला
मर-मर कर जीता रहता है
जी-जी कर मरने वाला
कैसी घुटन, चुभन यह कैसी
बातें हैं अहसासों की
अहसासों को पढ़ सकता है
कोई पिघले दिलवाला

जीवन मानव का होता है
जैसे मिट्टी का बर्तन
घूम रहा अपने घेरों में
करे चाक पर ज्यों नर्तन
मानव माटी, जीवन माटी
एक दिवस मिट जायेगा
माटी के बर्तन की टूटन
दिल जाने या दिलवाला

सुना रहा है अमृत गीता
मेरी वीणा के तारों में
भर जाता है रोज़ रंग जो
सूरज चाँद सितारों में
उन साँसों की सरगम समझे
मन वीणा को झंकृत कर दे
जीवन में अमृत रस भर दे
कोई सुरमय दिलवाला

कोई कितना ही समझाए
दिल तो दिल की माने है
जो दिल में आकर बस जाए
दिल उसको जी जाने है
दिल से दिल की राह बने जब
हट जातीं सब बाधायें
बाधाओं की पीड़ा जाने
दिल या कोई दिलवाला

दरवाज़ों से टकराता है
दीवारों से बतियाए
विरही के दीवाने दिल को
कोई कैसे समझाए
चुप रहना भी लगता मुश्किल
और बताना भी मुश्किल
घुटते दिल के अरमानों को
दिल जाने या दिलवाला

आसपास की भीड़-भाड़ में
बहुत अकेला होता है
जितना हँसता है बाहर से
उतना अन्दर रोता है
अन्दर की वीरानी को
बाहर की भीड़ बढ़ाती है
अन्तर का सूनापन क्या है
जाने सूने दिलवाला

सूनी-सूनी आँखों से
आकाश निहारा करता है
जीते जी मरना है यह
दिन-रात विचारा करता है
जब आशायें मर जाती हैं
मानव भी मर जाता है
जीते जी इस मर जाने को
सहता सूने दिलवाला

जीने का सुख, जीने का दुख
सब बातें हैं बेमानी
सुख-दुख की है क्या परिभाषा
आज तलक किसने जानी
किसका सुख, किसका दुख है
किसका दुख है, सुख किसका
सुख और दुख की इस उलझन में
उलझा रहता दिलवाला

ooo

उपेक्षिता का प्रश्न

मैं तुमसे
केवल एक ही प्रश्न
बार-बार पूछती हूँ
तुमने मुझे समझने का प्रयास
क्यों नहीं किया
मेरी झुकी पलकों के
शर्मीले इशारों को
मेरे अन्तर के
मीठे और कोमल विचारों को
मेरी नज़रों से दिए गए
हर एक जवाब को
मेरी ज़िन्दगी की
खुली किताब को
स्नेह और विश्वास से
पढ़ने का प्रयास
क्यों नहीं किया
मैं तो कोरा काग़ज़ थी
तुमने उस पर
अपने मन की रचना
गढ़ने का प्रयास क्यों नहीं किया
यदि करते
तो शायद यह जीवन कुछ और होता
और मैं/तुम्हारे दिल के अन्दर से प्रवेश कर
तुम्हारी आत्मा में समा जाती
और यह उपेक्षिता
सीता बन कर
अपने राम में रम जाती ○○○

चंद शे'र

इश्क़ की हद से गुज़र कर मैंने चाहा तुझको
सादगी तेरी पे मरना भी मुझे आता है दोस्त

दुख को इतना सहन कर लेने की आदत डाल ले
कि कोई भी दुख कभी तुझको दुखी न कर सके

हँस के सब झेल ज़माने के सितम ऐ हमदम
ग़म उठा कर के भी हँसना तो इक करिश्मा है

ज़िन्दगी के रास्ते में जब कभी मिलना सितमगर
देख कर मुँह फेर लेना बस यही अब इल्तिजा है

इस ज़िन्दगी के चक्र में रहे कौन-सी आशा
जब वक़्त ने बदल दी जीवन की परिभाषा

दूसरों ने धोये प्यार से, अपनों के दिये घाव
ज़िन्दगी में आते हैं, कैसे-कैसे पड़ाव

कभी अपनों ने दुत्कारा, कभी दूजों ने पुचकारा
ये कैसी उलझनें हैं मन कभी जीता कभी हारा

ग़ैरों में मिले अपने, अपनों में मिले ग़ैर
ग़ैरों ने दी मुहब्बत अपनों ने दिया बैर

ooo

जीवन की परिधि

आज अचानक ही
जीवन की परिधि
कुछ संकुचित-सी हो उठी है
युग-युग की मान्यतायें
पल भर में ही
धाराशायी हो गईं हैं
एक कटु मौन
भरा-भरा सा कण्ठ
अन्तस् की गहराइयों को चीर
उफनता चला आ रहा है
उस उमड़ते जलोदधि में
जीवन की नौका
बहकती-सी
मचलती-सी
अपने पथ पर बढ़ी जा रही है
एक अनजाने पथ पर
अनुभूतियों के रथ पर
उन्मत्त, आरूढ़ हो बही जा रही है
जीवन में रुदन है
या रुदन ही जीवन है
सब मौन
सब शून्य
आज मेरी कल्पना
कुछ अनूठी-सी हो उठी है
इसीलिये तो/आज अचानक ही
जीवन की परिधि
कुछ संकुचित-सी हो उठी है ○○○

ज़रा सँवरने दे

ज़िन्दगी वक़्त दे मुझे थोड़ा
मेरी वीणा के तार बजने दे
मेरे जीवन की सूनी महफ़िल को
दो घड़ी के लिये तो सजने दे

बीन के तार जब लरज उठते
ज़िन्दगी महकती बहारों से
तार टूटे तो ज़िन्दगी टूटी
दूरियाँ हो गईं सहारों से

ज़िन्दगी रहम कर ज़रा थोड़ा
कुछ समय तो ज़रा सँवरने दे
डगमगाते थिरकते क़दमों से
पल दो पल ज़रा बहकने दे

ज़िन्दगी जब मिली है तू मुझको
फिर क्यों दे रही सज़ा मुझको
तेरा मिलना है ख़ुशकिस्मती मेरी
ज़िन्दगी ख़ुद को न बिखरने दे

टूट न जाये मन की वीणा मेरी
मेरी वीणा के तार बजने दे
मेरे जीवन की सूनी महफ़िल को
दो घड़ी के लिये तो सजने दे

ooo

मेरी कामना

इन अँधियारे वीरानों में
मेरी आत्मा भटक-भटक कर
अपना कोई ऐसा साथी
ऐसा हितैषी
ऐसा स्नेही ढूँढ रही है
जो
मेरी भटकते मानस को सहारा दे
जो मेरी रोती आत्मा को
नेह प्यारा दे
जो दुख के क्षणों में सान्तवना दे
जो अँधियारी रातों में
प्रकाश मनभावना दे
जो मेरे कष्टों से पीड़ित
और प्रसन्नता से प्रसन्न हो
जिसके दुख में
मेरा मन भी विषण्ण हो
जिसकी आत्मा
मेरी आत्मा में संचित
कामनाओं को जान ले
जिसको नेह भरे साओं तले
यह मन अपना मान ले
○○○

ज़िन्दगी में

जीना है
जीते चले जाते हैं हम भी
वरना रखा क्या भला
इस ज़िन्दगी में
बंद आँखें रख नहीं सकते
खुली आँखें हमारी
इसलिये हैं
वरना देखा क्या भला
इस ज़िन्दगी में
क्या ख़ुशी क्या ग़म
सिर्फ़ दो लफ़्ज़ भर हैं
वरना सबकुछ एक सा है
ज़िन्दगी में
कोई आँखें बंद करके सो गया
और कोई खोल आँखें
आ गया
जीना और मरना
इसी को बोलते हैं
ज़िन्दगी में
कभी जीने की तमन्ना नहीं करते हैं
कभी मरने की दुआयें माँगें हैं
दोनों ध्रुव छू लेना ही
एक सच्चाई है ज़िन्दगी में
○○○

कितने अँधियारे

मेरी ज़िन्दगी में कितने
अँधियारे भर दिये हैं
ये किस जनम के बदले
यूँ हमसे ले लिये हैं

हमने तो तुझसे कोई
जन्नत नहीं थी माँगी
भरने को अपनी झोली
मन्नत नहीं थी माँगी

न छीन लेनी चाही
तुझसे तेरी ये दुनिया
मैं जानती हूँ कितनी
निर्दयी तेरी ये दुनिया

मैंने न फूल माँगे
तेरे बाग़ के कभी भी
काँटों के संग रह कर
काँटों से दोस्ती की

फिर भी क्यों तूने मेरे
उजियारे ले लिये हैं
मेरी ज़िन्दगी में कितने
अँधियारे भर दिये हैं

○○○

सागर में मिल जातीं लहरें

आतीं लहरें
जातीं लहरें

लहर-लहर कर
हहर-हहर कर
गहर-गहर कर
आतीं लहरें

चीर धरा की छाती को फिर
अपनी राह बनातीं लहरें
चट्टानों से सर टकरा कर
अपना आप मिटातीं लहरें

उफन-उफन कर आतीं लहरें
बहल-बहल कर जातीं लहरें
दहल-दहल कर आतीं लहरें
टहल-टहल कर जातीं लहरें

कितने राग सुनायें लहरें
कितने फाग दिखायें लहरें
कितने राज़ छुपाये दिल में
सागर में मिल जातीं लहरें
○○○

दुखियारे बादल

घिर आए रतनारे बादल
रंग-रंग के
वर्ण-वर्ण के
कारे और कजरारे बादल
नगर-नगर में घूम रहे हैं
डगर-डगर ये झूम रहे हैं
जंगल-जंगल
पर्वत-पर्वत
नदियाँ और तालाब समन्दर
गरज-गरज कर
चमक-चमक कर
कभी क्रोध में
कड़क-कड़क कर
कभी बहा कर ढेरों आँसू
छमछम रोयें
भटक-भटक कर
युग-युग से यूँ
घूम-घूम कर
जाने किसको
ढूँढ रहे हैं
हैं कितने
दुखियारे बादल
घिर आये रतनारे बादल
फिर आये कजरारे बादल
○○○

तेरे जाने के बाद

कितना तड़पे हैं हम तेरे जाने के बाद
मर गए हम तेरे रूठ जाने के बाद

हसरतें दिल की दिल में दबी रह गईं
कितनी बातें जो कहनी थीं चुप रह गईं
कैसे पायें तुझे छूट जाने के बाद

मेरे सरताज मेरे सहारे थे तुम
मेरी मंज़िल थे, मेरे उजाले थे तुम
कैसे ज़िन्दा रहूँ टूट जाने के बाद

मैं तुम्हारी थी तुम मेरे थे बाग़बाँ
ख़त्म कैसे अचानक हुई दास्ताँ
छुप गए तुम कहाँ लूट जाने के बाद

कितना तड़पे हैं हम तेरे जाने के बाद
मर गए हम तेरे रूठ जाने के बाद

ooo

न रोक सके

स्वप्न आँखों में रहे
पर न उन्हें देख सके
अश्क आँखों से बहे
हम न उन्हें रोक सके

बिजलियाँ दिल पे गिरीं
दिल के टुकड़े भी हुए
तुम से मिन्नत भी करी
तुम से दुखड़े भी कहे
क्या करें दिल ही तो है
हम न उसे रोक सके

तुम सितम करते रहे
हम भी सितम सहते रहे
ग़म के सागर में सदा
नाव बिना बहते रहे
जानते बूझते भी
ख़ुद को न हम रोक सके

हमने विश्वास किया
तुमने उसे तोड़ दिया
बीच मँझधार में
लाकर हमें क्यों छोड़ दिया
जी रहे मरते हुए
कुछ भी न हम रोक सके

○○○

क़लम बड़ी तलवार से

कहावत पुरानी है 'क़लम बड़ी तलवार से'
बच नहीं पाता कोई इस क़लम की मार से

भाग कर तलवार से आदमी बच जाता है
भाग जाये कहीं भी क़लम से न बच पाता है

तलवार एक बार में एक जान लेती है
क़लम एक बार में हज़ारों को डस लेती है

घाव तलवार का एक दिन भर जाता है
घाव क़लम की मार का ज़िन्दगी भर रिसता है

तलवार इन्सान को सदा ज़मीन ही सुँघाती है
क़लम गर चाहे तो आकाश तक पहुँचाती है

टूट गई तलवार तो बच गया आदमी
टूट गई क़लम तो मर गया आदमी

ooo

सैनिक के चरणों में

करे समर्पित तुमने अपने
प्राण देश के चरणों में
हम अर्पित करते श्रद्धा के
फूल तुम्हारे चरणों में
अपना जीवन देकर तुमने
दिया देश को जीवन दान
तुम जैसे वीरों के दम से
बनता भारत देश महान
बन्धु व्यर्थ कभी न होगा
यह तेरा अनुपम बलिदान
भारत सदा अखण्ड रहेगा
मिले हमें प्रभु का वरदान
वीर सपूत मातृ भू के तुम
अमर तुम्हारा नाम रहे
चहुँ दिशि गूँजे नाम तुम्हारा
जब तक सूरज चाँद रहें
तीन लोक का धन-वैभव
और पुण्य तुम्हारे चरणों में
हम अर्पित करते श्रद्धा के
फूल तुम्हारे चरणों में
ooo

शहीदों की ख़ातिर

न्यौछावर कर दिये प्राण,
आज़ादी के परवानों ने।
फाँसी का फंदा चूम लिया,
आज़ादी के दिवानों ने।
गोली खाकर भी सीने पर,
झुकने न दिया अपने ध्वज को।
कट शीश धरा पर गिरा मगर,
छू रहा तिरंगा अम्बर को।
जेलों में जीवन काट दिये,
भारत माता के वीरों ने।
हो कर शहीद तज दिये प्राण,
कारागृह की प्राचीरों में।
पर आज हुआ कैसा अनर्थ,
ईमान धर्म सब भूल गये।
आँखों में दिल में स्वार्थ लिये,
हम नैतिकता को भूल गये।
हो कर स्वतंत्र उन पुरखों के,
बलिदानों को हम भूल गये।
जो इस स्वतंत्रता की ख़ातिर,
फाँसी फंदों पर झूल गये।
उन वीर शहीदों की ख़ातिर,
यह व्रत हमको लेना होगा।
तन में ये प्राण रहें न रहें,
ध्वज भारत का ऊँचा होगा।

○○○

हमें न बाँटो

हम भारत में रहने वाले, इक दूजे के सहारे हैं।
यहीं हमारे मंदिर, मस्जिद, गिरजे और गुरुद्वारे हैं।

हममें फूट न डालों भैया, धर्म जाति के नारों से।
हम तो जुड़े हुए आपस में, आपस के त्यौहारों से।

ऊँच-नीच या छुआछूत को, लाते नहीं विचारों में।
इसीलिये लहराये तिरंगा, धरती, चाँद, सितारों में।

ख़ून सभी का एक रंग का, हम सब हैं भाई-भाई।
मिलकर जो संघर्ष किया था, उससे आज़ादी पाई।

हमें न बाँटो हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई में।
धर्म हमारे घर के अन्दर, बाहर भाई-भाई हैं।

धर्म नहीं सिखलाता हमको, आपस में लड़ना मरना।
ज़ात-पात के भेदभाव को, दूर हमें अब है करना।

संग चलें हम, संग हँसें हम, संग-संग खायें-पीयें।
रहें प्रेम से, बसें प्रेम से, संग-संग ही हम जियें।

एक हमारी धरती माता, एक हमारा है आकाश।
एक हमारा हृदय तन्य है, एक हमारा है विश्वास।

रंग-रंग के फूल खिले हैं, नित-नित नई बहारें हैं।
हम भारत में रहने वाले, इक दूजे के सहारें हैं।

○○○

पुकार

तुम बिछड़ कर दूर कैसे चल दिये
हम तो बस तुमको पुकारा ही किये

फ़ासले इतने कहाँ से आ गये
जा छुपे हो तुम कहाँ बतलाओ तो

किस जहाँ में घर बना बैठे हो तुम
एक पल आकर ज़रा बतलाओ तो

क्या किसी पर्वत गुफा में मौन हो
तुम समाधि लीन बैठे हो कहीं

या क्षितिज से दूर जाकर छिप गए
आसमानों से भी आगे पर कहीं

या लगा ली जल समाधि भूल सब
सागरों की गोद में जाकर कहीं

किन्तु जिनको छोड़ कर तुम चल दिये
वो तुम्हारे बिन भला कैसे जियें

ज़ख़्म तो तुमने बहुत से दे दिये
बिन तुम्हारे कौन अब उनको सिये

रात दिन के दर्द तुमने दे दिये
हम तो बस तुमको पुकारा ही किये

○○○

पानी की तरह

ज्योति की भाँति
अगर जलना है
तो जल जाओ तुम भी
जो स्वयं जलकर भी देती
दूसरों को रौशनी है
तुम गुलाब बनो
महक भर दो जगत में
जो स्वयं काँटों में रहकर
बाँटता सबको ख़ुशी है
दीप की बाती से
अपनी ज़िन्दगी को तौल लो तुम
जब तलक चलती है
जलती ही चली जाती है
अपने आख़िरी पड़ाव तक
और देती है प्रकाश
अपनी ज़िन्दगी तक
अगर मिलना है
तो मिल जाओ सबसे
पानी की तरह
जो जिससे भी मिले
उसी को लगाता गले
इतना घुल जाता उससे
कि अपना रूप भी
मिला लेता उससे
○○○

चिलबिली लहरें

थीं अब तक कहाँ और किससे मिली हैं
ज़रा इनको देखा बड़ी चिलबिली हैं
ये सागर की लहरें कहाँ से चली हैं
कहाँ से ये आईं कहाँ को चली हैं
ये सागर की लहरें बड़ी चिलबिली हैं
कभी हैं उलटती
कभी हैं पलटती
हैं पल में ये कूदीं
हैं पल में ये डूबीं
कभी छम से आईं
कभी जा के खोईं
अभी थीं फ़व्वारा
अभी जा के सोईं
कभी ऊँची उठतीं
कभी नीचे गिरतीं
कभी जम के आतीं
कभी हैं बिखरतीं
ये लहराती-इठलाती
बलखाती आतीं
बड़ी दिलजली हैं
बड़ी मनचली हैं
ज़रा इनको देखो
बड़ी चिलबिली हैं

○○○

जीवन के नाते

भूलने से अगर
भुलाये जा सकें
वे लोग
जो अक्सर याद आते हैं
तो शायद मुझे भी
समझ में आ जायें
कैसे ये जीवन के नाते हैं
कभी कोई बिल्कुल अनजाने
जो अब तक थे बेगाने
क्षण भर में बन जाते हैं अपने
आँखों में बस जाते हैं
बन कर सुन्दर सपने
फिर वही अपने
रेत की तरह फिसल कर
निकल जाते हैं हाथों से
फिर रात दिन आकर
सताते हैं यादों में
जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है
जिनकी यादें सबसे अधिक सताती हैं
पल-पल छिन-छिन तड़पाती हैं
सबसे अधिक याद
आते भी वही हैं
जितना भुलाओ
उतना याद आते हैं
मानव की त्रासदी
ये जीवन के नाते हैं

○○○

खो गई डगर

मैं प्रेमनगर को चली मगर
खो गया नगर
मैं भटक रही हूँ डगर-डगर
खो गई डगर
किससे पूछूँ कैसे जाऊँ
मैं अपना लक्ष्य कहाँ पाऊँ
मैं भूल गई हूँ राह पंथ
कैसे हो पूरा प्रेमग्रन्थ
मैं ढूँढ फिरी हूँ जग सारा
नैराश्य घिरा मन भी हारा
मैं प्रेम दिवानी भटक रही
मैं पग-पग पर हूँ अटक रही
नैनों में घिर आया सावन
खो गया कहाँ पर मनभावन
आँसू बह-बह कर सूख गए
मस्तिष्क हृदय बन ठूँठ गए
जीवन का यह कैसा क्रन्दन
जोगन बन घूम रही बन-बन
जाने मनमीत कहाँ खोया
मेरा सौभाग्य कहाँ सोया
दिन को न चैन न रात नींद
काँटों पर रहती आठ पहर
मैं प्रेमनगर को चली मगर
खो गया नगर
खो गई डगर
○○○

दर्द के फ़साने

मैं दर्द के फ़साने किसको सुनाऊँ जाकर
न मैं कहूँगी उससे न वो सुनेगा आकर
रिश्तों की डोर कैसे
झटके में एक टूटी
वो मुझसे कुछ ख़फ़ा है
मैं उससे कुछ हूँ रूठी
ढेरों शिकायतें जो
दिने ने रखी दबाकर
न मैं कहूँगी उससे
न वो सुनेगा आकर
वो छोड़ कर गया यूँ
रिश्ता न जैसे कोई
दिल में छिपाये ग़म को
रातों को मैं हूँ रोयी
काँटे हज़ारों दिल में
क्योंकर गया चुभाकर
न मैं कहूँगी उससे
न वो सुनेगा आकर
छोटी थी एक दुनिया
छोटा था इक बसेरा
सुख चैन और ख़ुशी का
रहता था जिसमें डेरा
यूँ पलक की झपक में
बैठी हूँ सब लुटाकर
मैं दर्द के फ़साने
किसको सुनाऊँ जाकर

ooo

ज़िन्दगी से ज़िन्दगी क्यों

ज़िन्दगी से ज़िन्दगी क्यों डर रही है
क्यों बिना कारण हर इक पल मर रही है

मौत के भरोसे पर ज़िन्दगी जी रही
जीने को ज़िन्दगी रोज़ मौत के दिन गिन रही

राह में काँटे हैं मंज़िलें ओझल हैं
ज़िन्दगी जीना भी कितना बोझल है

एक तपता हुआ रेगिस्तान है ज़िन्दगी
मौत की राह तकती श्मशान है ज़िन्दगी

ज़िन्दगी को ढूँढती मैं फिर रही हूँ दर-ब-बर
खो गया उसका पता अब पाऊँ मैं उसको किधर

ज़िन्दगी की राह में पाते रहे खोते रहे
क़तरा क़तरा ज़िन्दगी के सफ़र में रोते रहे

ज़िन्दगी पतझड़ भी है बहार भी है
ज़िन्दगी रुदन भी है प्यार भी है

○○○

इक हूक

ज़िन्दगी कितनी अकेली
दिल भी है तन्हा मेरा
दिल में है इक हूक उठती
जब ख़्याल आता तेरा

कब अचानक हम मिले थे
कब जुदा हम हो गए
कब अचानक तेरे ऊपर
क्यों फ़िदा हम हो गए

कितने अरमाँ कितने सपने
बुन लिये इक तार में
हम सरापा हार बैठे
अजनबी के प्यार में

फिर अचानक गाज सी
आकर गिरी सर पर मेरे
छोड़ कर तुम चल दिये
जैसे कतर कर पर मेरे

अपना सबकुछ हार कर
बस एक पाया था तुम्हें
ज़िन्दगी को वार कर
बदले में चाहा था तुम्हें

क्यों छुड़ाया तुमने दामन
इस तरह बन कर निठुर
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी में
कर दिया क्यों तुमने दूर

मूक रह जाती हूँ मैं बस
जब सवाल आता तेरा
दिल में है इक हूक उठती
जब ख़्याल आता तेरा ○○○

कोई किरण

कहीं से कोई किरण
आ गई उजास की
कोई किरण बन गई
साँस मेरी आस की
आँखों को बरसों के
अँधियारे भूल गए
अन्तर में जगमग कर
उजियारे झूल गए
होता है अँधियारे के
बाद ही उजाला
कभी तो सुख पायेगा
मन दुख का पाला
घुल रहीं हवाओं में
गीत की लहरियाँ
मन में भी खनक रहीं
नृत्य की घुँघरियाँ
कोई हवा लाई है
बूँद मेरी प्यास की
प्यास अब बुझायेगी
प्यासी यह चातकी
कहीं से कोई महक
आ गई उल्लास की
कोई किरण बन गई
साँस मेरी आस की
○○○

उठो साथियो

उठो साथियो नाम देश का सबसे ऊँचा करना है
करें न हम अन्याय कभी पर नहीं किसी से डरना है

हम हों चाहे किसी जाति के किसी रंग के हैं भाई
धर्म हमारे दिल की दौलत अलग कहाँ से हम भाई

पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण जहाँ तलक सीमा भाई
भाषा वेश अलग हों चाहे नहीं अलग हैं हम भाई

एक हमारे चंदा सूरज नदियाँ सागर और पहाड़
जड़ें बहुत गहरी हैं अपनी सकता हमको कौन उखाड़

इस धरती के पुत्रों ने हँस-हँस कर सिर बलिदान किये
तब आया था नया सवेरा आज़ादी की शान लिये

भारत माता की यह धरती युग-युग तक आज़ाद रहे
मानवता ममता समता से सदा शाद आबाद रहे

करें परिश्रम हम सब मिलकर गूँजें सुख सपनों के गान
विश्व गुरु बन जाये भारत विश्व करे जिसका सम्मान

वसुधा ही सारी कुटुम्ब है हमको सबसे जुड़ना है
द्वेष ईर्ष्या भेदभाव तज हमको ऊँचा उठना है

○○○

लगावट

चाहती हूँ बंद कर लूँ ख़ुद को
एक ऐसे पिंजरे में
जिसमें न हो कोई दरवाज़ा
न हो झरोखा
न कोई व्यंग से हँसे
न दे पाये धोखा
न देख पाये कोई मुझे
अपना पराया
इतना अँधेरा हो
कि दूर रहे अपना ही साया
जब क़िस्मत पर
अँधेरों के परदे पड़े हों
तो रौशनी की उम्मीद कहाँ से आयेगी
अँधेरों की अभ्यस्त आँखों को
सूरज की किरण क्योंकर भायेगी
मुझे नफ़रत के अँधेरों में रहने की
आदत सी हो गई है
मुझे अपने अँधेरे खोल से
लगावट सी हो गई है
ooo

मेरी मंज़िल कहाँ खो गई

लिए सुबह की आस हृदय में
कितनी लम्बी रात हो गई
दुनिया के इस चक्रव्यूह में
मेरी मंज़िल कहाँ खो गई
चहुँ ओर है तिमिर घनेरा
राहों को काँटों ने घेरा
पग-पग बाधा पग-पग दुविधा
अन्दर बाहर घना अँधेरा
हर इक राह मुड़कर आ जाती
वहीं जहाँ से शुरू किया था
आँख मिचौली खेला हर पल
जिसको अपना मान जिया था
सारी राहें रुक जाती हैं
दोराहों चौराहों पर
किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ी हूँ
मैं जीवन की राहों पर
मेरा पाला सदा पड़ा है
आँधी और तूफ़ानों से
आती हैं आवाज़ें मुझको
सन्नाटों वीरानों से
उलझ गया जीवन बालों सा
क़िस्मत जाकर कहाँ सो गई
दुनिया के इस चक्रव्यूह में
मेरी मंज़िल कहाँ खो गई
○○○

अपने रूठने न पायें

टूटे हुए रिश्ते सारी उम्र
दिल में काँटों की तरह गड़ते रहते हैं
इनके दिये ज़ख़्म दावानल की तरह बढ़ते रहते हैं
दामन को जितना समेटो
उतना काँटों में फँसता जाता है
इन रिश्तों का दावानल
दिल में कहीं किसी कोने में
निरन्तर जलता रहता है
रिश्तों का टूट जाना
इन्सान का टूट जाना बन जाता है
और इस मार से एक पूरा इन्सान
तिनका-तिनका टूट-टूट कर बिखरता रहता है
रिश्ते भगवान की एक ऐसी देन है
जो हमें ख़ुद को नियंत्रण में रखने की,
अनुशासन में बँधने की,
संयम से रहने की, सीख देते हैं
ये रिश्त न होंगे
तो हम एक बार फिर से आदिम मानव बन जायेंगे
अकेले घूम-घूम कर शायद दानव बन जायेंगे
टूटते रिश्तों की
चुभन, जलन और घुटन से बचने के लिए,
इन काँटों के ज़ख़्मों से बचने के लिए
अच्छा है कि रिश्ते टूटने न पायें
हमारे अपने रूठने न पायें
○○○

याद करें जब लोग हमें

साँझ पड़े दिन ढल जाता है
रात आती दिन आता है
इसी तरह दिन ढलते उगते
जन्म गुज़रता जाता है
ढल जायें ये दिन यादों में
कर जायें हम कुछ ऐसा
याद करें जब लोग हमें
बोलें 'वह था इन्साँ कैसा'
जीवन काट सभी जाते हैं
जी कर कुछ ही जाते हैं
खुद जीते हैं औरों को भी
राह दिखा कर जाते हैं
मानव जीवन सीमित है
पर काम असीमित होते हैं
होते वही सफल जीवन में
काम उचित जो करते हैं

ooo

मस्तक पर है मुकुट हिमालय

मेरा भारत देख मुझे है प्राणों से प्यारा
जहाँ चमकते रैन दिवस सूरज चंदा तारा

कितनी ऋतुएँ कितने मौसम आते-जाते रहते
कितने दरिया और समन्दर अपनी धुन में बहते

मस्तक पर है मुकुट हिमालय और चरणों में सागर
सिर पर नीलाकाश लिए हीरे मोती की चादर

राम कृष्ण और महावीर गौतम नानक सब आए
जिनकी शिक्षाओं ने दुनिया भर में दीप जलाए

मेरा भारत सर्वधर्म का एक अनोखा देश
भिन्न-भिन्न बोली भाषायें भिन्न-भिन्न हैं वेश

फिर भी सब बच्चे भारत के, सबके दिल हैं एक
एक धर्म मानवता सबका चाहे धर्म अनेक

आस-पास सब बने हुए मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा
मेरा भारत देश मुझे है प्राणों से भी प्यारा

○○○

ऐसा संयोग

गया वक़्त फिर हाथ न आये
सारा जग जाने यह बात
फिर भी वक़्त गँवा कर मानव
खाता जीवन में आघात
खेत चुग गईं जब चिड़ियाँ
तब पछताने से क्या होगा
फिसल गया जो वक़्त हाथ से
उसे याद कर क्यों रोता
बीत गया जो उसे भुला दो
आगे की अब बात करो
वक़्त अभी भी जो है बाक़ी
उससे अपने हाथ भरो
सदुपयोग करके क्षण-क्षण का
जीवन को जी भर जी लो
ख़ुशियाँ बाँट सभी अपनों को
ख़ुद भी अमृत रस पी लो
राज़ यही अच्छे जीवन का
जब हो पल-पल का उपयोग
लौट कभी फिर न आयेगा
जीवन में ऐसा संयोग
बन्धु-मित्र, सारे साथीगण
एक शपथ ख़ुद से ले लो
सदा करोगे निज जीवन के
पल-पल का तुम सदुपयोग

ooo

भारत के वीर

वीर देश भारत के वीर, हम हैं नागरिक धीर गम्भीर
नहीं जानते हम रुकना, नहीं चाहते हम झुकना
चमके बिजली अम्बर में, या गरजें घनघन बादल
राह में हों ऊँचे पर्वत, या हों घने-घने जंगल
आयें आँधी या तूफ़ान, नहीं रुकेंगे हम बलवान
कोई डराने आ जाये, कोई मारने आ जाये
कर न सके हमको भयभीत, नहीं पायेगा हमको जीत
कितनी विपदायें आयें, हमको नहीं सता पायें
लक्ष्य मिलें हमको सच्चे, हम भारत माँ के बच्चे
माँ का प्यार हमारे साथ, सदा शीश पर माँ का हाथ
पर्वत भी झुक जायेंगे, सागर भी रुक जायेंगे
नदियाँ झरने और तालाब, जंगल में मंगल का राज
फसलें भी लहरायेंगी, हरियाली छा जायेगी
भर-भर कर बाँहों में शक्ति
करते रहें देशभक्ति
ज्ञानवान हम बनें सदा
मधुर प्यार में बहें सदा
उन्नत देश समाज बने
नेह स्नेह के दल जलें
दूर रहें अन्याय से
कर दें अलग नीर से क्षीर
वीर देश भारत के वीर
हम हैं नागरिक धीर गम्भीर

ooo

वृक्षों की माया

अगर पेड़ दुनिया में होते नहीं
तो हमें कौन देता ये शीतल सी छाया
ये सूरज की किरणों जला देतीं हमको
न मिलती हमें धूप-छाया की माया
न फल फूल होते, न हरियाली होती
न खाने को होता, न ख़ुशहाली होती
खुली शुद्ध वायु को हम सब तरसते
बिखर जाते बादल न हम पर बरसते
जलाने को लकड़ी हमें फिर न मिलती
बना पाते हम न ये मेज़ें न कुर्सी
घरों मे न लग पाते खिड़कियाँ दरवाज़े
बिना डंडे के कैसे बज सकते बाजे
खड़े देवता से धरा पर महकते
सभी प्राणी इनकी कृपा से चहकते
पशु-पक्षियों को ये देते बसेरा
वन उपवन में उनको दें प्यारा सवेरा
है सृष्टि में सारी इन वृक्षों की माया
शिवम् सुन्दरम् सत्य इनमें समाया
हमें प्यारी धरती की ख़ुशहाली प्यारी
हमें वृक्षों से मिलती हरियाली प्यारी
है वृक्षों की माया ही दुनिया में न्यारी
इनसे ही सजते हैं वन, उपवन, क्यारी
है वृक्षों पर निर्भर ये जीवन हमारा
जो काटे इन्हें वो है दुश्मन हमारा
○○○

मातृभूमि-जन्मभूमि

मातृभूमि-जन्मभूमि
करते हम वंदन तुम्हारा
पुण्यभूमि देवभूमि
हम करें अर्चन तुम्हारा
तेरी धरती ही हमारा पालना है
नीला अम्बर ही, है माँ आँचल तुम्हारा
शस्य श्यामल गरिमामयी माँ
वंदनीय है सदा कण-कण तुम्हारा
श्वेत नदियाँ नीले सागर
मुकुट सा हिमगिरि हिमालय
धान्य धन से खनिज धन से
माँ भरा आँगन तुम्हारा
भिन्न धर्म और जातियाँ हैं
अनगिनत भाषायें भी हैं
फिर भी हम सब एक हैं माँ
हर मनुज बालक तुम्हारा
मेरी भारत माँ सदा-सर्वदा
लहराये ऊँची ध्वजा तेरी
यह शपथ लेते हैं हम
अर्पित तुझे तन-मन हमारा
मातृभूमि-जन्मभूमि
माँ भारती वंदन तुम्हारा
○○○

चरण धोयें भारत के

दुनिया के सारे देशों में जो चीज़ें हैं ख़ास
उनसे कहीं अधिक चीज़ें हैं मेरे देश के पास

उत्तर में उत्तुंग हिमालय खड़ा है पहरेदार
जाड़ों की ठंडी हवाओं को सहकर उनके वार

दक्षिण से आती हवायें जब टकरातीं पर्वत से
होती वर्षा भारत में बहतीं नदियाँ पर्वत से

दक्षिण में तीनों सागर मिल चरण धोयें भारत के
झर-झर-झर-झर झरते झरने गीत गायें भारत के

घने-घने जंगल हैं कहीं तो कहीं हैं नन्दन कानन
मरुभूमि है अगर कहीं तो कहीं है उपवन मनभावन

सूरज चंदा तारों ने भी पूरा प्यार दिया है
छः ऋतुओं ने क्रम से आ जीने का सार दिया है

शक्ति हमारे तन में दी भारत माता की माटी ने
विद्या बुद्धि दान करी है माता सरस्वती ने

देकर प्राण बचायें सदा हम भारत माँ की लाज
देश हमारा धरती अपनी रखो यह विश्वास

दुनिया के सारे देशों में जो चीज़ें हैं ख़ास
उनसे कहीं अधिक चीज़ें हैं मेरे देश के पास

○○○

कैसी वह महारानी थी

झाँसी की रानी की कविता पढ़ी थी हमने बचपन में
उसका अमिट प्रभाव पड़ा था हर बच्चे की मन में

मैं हैरान रहा करती थी कैसी वह महारानी थी
जिस पर रची सुभद्रा जी ने गौरवपूर्ण कहानी थी

पूरी कविता याद करी थी देश के बच्चे-बच्चे ने
मन में धारण किया था उसको हर इक सच्चे बच्चे ने

अपनी झाँसी कभी न दूँगी नारा मन में धार लिया
अपना भारत कभी न देंगे रानी ने आधार दिया

कविता की हर पंक्ति को दिल के अन्दर से गाते थे
चढ़ी लिये तलवार अश्व पर चित्र नयन में आते थे

लक्ष्मी मर्दानी की गाथा ने, मन में ऐसा जोश भरा था
रग-रग में गोरों के प्रति, एक भयंकर रोष भरा था

बलिदानी रानी की कहानी, आजी भी राह दिखाती है
देशप्रेम की देशभक्ति की, मन में चाह जगाती है

जब-जब कविता याद है आती, भरता साहस तन-मन में
झाँसी की रानी की कविता पढ़ी थी हमने बचपन में

ooo

आ पहुँचे काले बादल

बड़े-बड़े घड़े भर-भर कर
आ पहुँचे बादल काले
आसमान में ऐसे झूमें
जैसे हाथी मतवाले
पर्वत-पर्वत जंगल-जंगल
उलटे ख़ूब घड़े जाकर
ख़ूब भिगोया धरती को
घाटी वादी ऊसर बंजर
कितनी सेवा करते सबकी
ये बादल भोले भाले
खेतों में उपवन में जाकर
सरस-सरस सरसाया आकर
पानी ख़तम हुआ सागर से
और घड़े भर लाये जाकर
कभी-कभी जब ज़्यादा बरसें
जल थल हैं कर देते
सूखी प्यासी धरती का
ये पानी से भर देते
धरती के कण-कण में जैसे
नये प्राण भर डाले, आ पहुँचे बादल काले
गर्मी से घबराये जन को, पशु पक्षी मानव के तन को
अन्दर तलक भिगोया आकर, अपना अमृत जल बरसा कर
नदियाँ ताल तलैया कुइयाँ, भरे लबालब बरस-बरस कर
सबको देखें एक नज़र से, मिलें गाँव से मिलें शहर से
कभी उड़े ऐसे सफ़ेद, जैसे रूई के गाले
आ पहुँचे बादल काले, जैसे हाथी मतवाले ○○○

एक छोटा-सा शब्द : वक़्त

वक़्त - एक छोटा-सा शब्द
मात्र ढाई अक्षर से बना
एक बड़ा-सा शब्द
जो पल भर में बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं को
दुश्मन के चरणों में झुका सकता है
जो लाख का ख़ाक और ख़ाक को लाख बना सकता है
जो पलक की झपक में
अम्बर छूती इमारतों को धाराशायी कर देता है
जो क्षण भर में धरती के दो टुकड़े करके
बड़े-बड़े शहर, बड़ी-बड़ी सभ्यतायें, संस्कृतियाँ
उसमें बंद करके धरती को फिर से जोड़ देता है

वक़्त - जो सागर से उठी मीलों लम्बी-चौड़ी-ऊँची दीवारों से
देखते-देखते लाखों जानें निगल जाता है
सुन्दर से सुन्दर चेहरा वक़्त की सलवटों में लिपट कर
ख़ुद को भी नहीं पहचान पाता
किसी को ख़बर तक नहीं होती
कब उसका वक़्त बदल जाये
कब उस पर मेहरबाँ हो जाये
कब उससे ख़फ़ा हो जाये
सारी सृष्टि को नचा रहा है
यह छोटा-सा शब्द : वक़्त!

ooo

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद
पूरे देशवासियों को अपनी कल्याणकारी सरकार से
अपने मूल्यवान मतों द्वारा चुने गये नेताओं से
बहुत सी आशायें थीं, कोई दुराशायें न थीं
किन्तु उनके नसीब में तो ढेर सारी निराशायें थीं
आज़ादी की लड़ाई में गोलियाँ लाठियाँ खाने वाले
वर्षों तक कारागार में कष्ट सहने वाले
हमारे पुराने आज़ादी के दिवानों को
देश के सिरफिरे स्वार्थी नेता अपना न बना पाये
निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करने वाले
देश के लिये तन-मन-धन लुटाने वाले
हमारे पुराने रामराज्य चाहने वाले
नेता हाशिये पर कर दिये गये
अँगूठा छापने वाले बाहुबली कुर्सियों पर बैठ गये
गुण्डागर्दी से वोट हड़प कर राजा बन गये
ईमानदार, विद्वान, समाजसेवी नेता डर में जी रहे थे
लालची, स्वार्थी, जहालत से भरे
लालबत्ती वाली गाड़ियों में चढ़े
नये-नये नेता निर्भय घूम रहे थे
आज़ादी मिले बरसों-बरस बीत गये
हालात बिगड़ते जा रहे हैं
एक संवेदनशील शायर के अनुसार...
'जहालत रो रही है मुँह छिपाये
जहालत कहकहे बरसा रही है'
ooo

फूल की महक और इन्सानियत

बाग़ में घूमते दो मित्र
एक-एक फूल पत्ते को प्रेम से निरख रहे थे
डाली-डाली पर झूलते सुन्दर फूलों को परख रहे थे
एक सुन्दर फूल को देखकर रुक गये
उसकी रंग-बिरंगी सुन्दरता को सराहने के लिये झुक गये
अचानक एक मित्र के माथे पर शिकन आ गई
कैसा फूल है, देखने में सुन्दर, सुगन्ध का नाम नहीं
दूसरा मित्र संजीदगी से बोला - भाई यह गुलाब नहीं
काँटों के बीच रहकर भी जिसकी सुगन्ध कहीं नहीं गई
यह तो उस आदमी की तरह है जो धन दौलत, इन्सानी सूरत
सब कुछ होते हुए भी इन्सान नहीं होता
अर्थात् जिसमें इन्सानियत का नाम नहीं होता
जैसे फूल की महक सबको अपनी ओर बुलाती है
वैसे ही अच्छे इन्सान की इन्सानियत भी
दूर से सबको आकर्षित करती है
अपने पास बुलाती है, अपना बनाती है
अच्छे-बुरे वक़्त में साथ निभाती है
○○○

झुर्रियों की झाड़ी

चलती ही रहती है ज़िन्दगी की गाड़ी
कभी इधर-उधर, कभी तिरछी सी या आड़ी
कभी इन्सान खाए चक्कर
कभी धीमी या ज़ोर की टक्कर
जीवन नैया रुकती नहीं, चाहे लहरें कितनी ही लहरायें
चाहे ग़म के बादल कितने ही फहरायें

इन्सान को भी ख़ुद ही बनानी हैं अपनी राहें
कुछ नहीं मिलेगा भरने से आहें
कोई कहता है जो किया है वही मिलेगा
कोई कहता है जो चाहेगा वह ज़रूर मिलेगा
जहाँ चाह वहाँ राह या कर्म कर, फल की इच्छा न कर
भगवान भी मदद करेगा, पहले अपनी मदद ख़ुद कर

हँसी आई, हँसी गई, ख़ुशी आई, ख़ुशी गई
ग़म के दिन आये, चले गये
ज़िन्दगी दर्द-सितम के दिन भूल गई
चलता रहा सफ़र, बीतते रहे आठों पहर
पीते रहे दोनों - अमृत और ज़हर

फिर न जाने कब मलाई सी चिकनी त्वचा
बनने लगी झुर्रियों की झाड़ी
किसी के बाल ग़ायब हुए, किसी की बढ़ी सफ़ेद दाढ़ी
चलती ही रही ज़िन्दगी की गाड़ी
कभी अगाड़ी कभी पिछाड़ी, कभी तिरछी, कभी आड़ी

○○○

यह प्रवचन नहीं

मानव की हार उसका दानव होना
मानव का चमत्कार उसका देवता होना
मानव की जीत उसकी जीत होना
मानव की मानव से प्रीत होना

न यह समझें कि यह प्रवचन है
यह तो मानव को मानव बने रहने के लिए निवेदन है
मानव को प्रभु ने एक बहुत बड़ा उपहार दिया है
उस उपहार का नाम संवेदन है
यह मानव का मानव को स्नेहालिंगन है
एक दूसरे के प्रति अवलम्बन है

जहाँ चाह होती है वहीं निकल आती है राह
तभी तो दिल से दिल तक पहुँच जाती है आह
सुनकर किसी दुखी प्राणी का क्रन्दन
मानवता प्रेमी आ जाता है बनकर अवलम्बन
ऐसे ही लोगों के होने से संसार बनता है नन्दन
कल्याणकारी मानवों का सब करते हैं वन्दन
मानव को मिलता है मानव से अभिनन्दन

○○○

यह खुरदरा इतिहास

क्यों आज मेरे जीवन का इतिहास
दिल को किर-किर-किर-किर करता कुरेद रहा है
मेरे दिल की एक-एक परत के आसपास
एक बार फिर दोहरा रहा है द्वापर का इतिहास
जब देवव्रत ने भीष्म प्रतिज्ञा थी खाई
जिसने कुरुक्षेत्र युद्ध की भूमिका थी बनाई
जब भाइयों ने भाइयों से करी थी लड़ाई

ऐसी ही स्थिति हुई थी जब एक झंडे की छाँव में
सारे भारतवासी चढ़े थे साथ एक ही नाव में
उस एकता ने अंग्रेजों की सत्ता दूर थी भगाई
लेकिन ठीक स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व एक अजब स्थिति आई
सैंकड़ों वर्षों से साथ रहने वालों के दिलों में काँटा गड़ गया
इतना गहरा कि अखण्ड भारत दो टुकड़ों में बँट गया

आज देश में कलियुग का चौथा चरण पैर जमा रहा है
द्वापर में जब एब द्रोपदी का चीरहरण हुआ था
तब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था
आज बलात्कार, अपहरण, भ्रष्टाचार, व्यभिचार सब हो रहा है
रोज़ सैंकड़ों द्रोपदियों का चीरहरण हो रहा है
देश के नेता कौरवों पाण्डवों की तरह लड़ते रहते हैं
जनता के जीवन में बाधायें खड़ी करते रहते हैं

विकास की प्रगति रुकती है, प्रजा ख़ून के आँसू रोती है
यह अत्याचार क्यों? अब तो विदेशियों का राज नहीं है
क्यों आ रहा है मेरे मन में यह खुरदरा इतिहास?
शायद भाई-भाई बना रहे हैं नये कुरुक्षेत्र का इतिहास

सूने पलों में भी

जीवन के सूने पलों में भी
कुछ सोच लो अपने लिये नया
न याद करो बीते दिन रैन
न मिल पायेगा कभी भी चैन
जो बीत गया सो बीत गया
आयेगा अब कुछ नया-नया

जब जीवन में कुछ न रहे शेष
केवल चिन्ताओं का हो प्रवेश
तब अँधियारे से न घबराना
तुम खुद ही दीपक बन जाना
पथ ज्योतित करना जला के दीया
कुछ सोचना अपने लिये नया

संघर्षों में न लगाओ चीख़
हर ठोकर से लो नई सीख
ठोकर को लगाओ इक ठोकर
नई राह चुनो शक्तिमान बनकर
न कभी जलाना अपना जिया
कुछ सोचना अपने लिये नया

यह जीवन तैरती नैया है
तू स्वयं ही इसका खिवैया है
कोई न साथ निभायेगा
जो पास तेरे वो चुरायेगा
जीवन का हर पल क्रिया प्रतिक्रिया
मिलता है यहीं सब लिया दिया
फल पायेगा जो भी कर्म किया
कुछ सोच लो अपने लिये नया

राहें मिलती रहेंगी

मत डर, मत मर
सुनते-सुनते चलती गई डगर

मरते भी रहे, डरते भी रहे
ज़िन्दगी जीते भी रहे

चाहें खोईं, राहें खोईं
दम न रहा आहें खोईं

गिरते भी रहे, चलते भी रहे
संघर्षों से लड़ते भी रहे

आगे-आगे बढ़ते रहे
हम सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ते रहे
अगली सीढ़ी राह तकती है

चाहे कुछ भी भूल जायें
पर कभी ख़ुद को न भूल जायें
वरना मंज़िल कभी हाथ न आयेगी

जीवन तो भूल-भुलैया है
डूबती उतराती नैया है
हम ख़ुद ही उसके खिवैया हैं

हम ज़िन्दगी में चलते रहेंगे
नई राहों से मिलते रहेंगे
आत्मा परमात्मा को कभी न भूलेंगे ○○○

सच्चा पछतावा

दिल तो होता है बच्चा
न होता है झूठा, न होता है सच्चा
जो देखता है, सुनता है, देता है बोल
न मन में भय न दुविधा का कोई झोल
कभी-कभी सच्चा दिल भी खा जाता है धोखा
अगर सोचकर, समझकर उसने न बोला होता
सदा बड़ों से सुनते रहे, 'पहले तोल फिर बोल'
फिर भी हम क्यां भूल जाते हैं बड़ों के वचन अनमोल
कही अहं में आकर कुछ भी कह देते हैं
कभी क्रोध में होश खोकर कुछ भी बोल देते हैं
लेकिन प्रायः बाद में अन्दर बैठा सच्चा बच्चा
या परमात्मा की प्रतीक आत्मा
एक बार तो हमें अवश्य झकझोरते हैं
दिल, दिमाग़ और ज़बान एक दूसरे से प्रश्न करते हैं
काश! हमने सोचकर बोला होता
काश! हमने होश न खोया होता
यदि यह सच्चा पछतावा होता है
तो भविष्य में हमें अगली ग़लती से बचा लेता है
यदि ऐसा हो जाये तो जीवन कितना सुखमय हो जाये
सच्चे दिल से चलें तो जीवन उल्लासमय हो जाये
हमारी धरा कल्याणमय हो जाये
मानव की मानवता तेजोमय हो जाये
○○○

अंजाम-ए-हिन्दोस्ताँ क्या होगा

दो बुज़ुर्ग दोस्त बाग़ में सैर करते हुए
धीमे-धीमे क़दमों से चलते हुए
दोनों पढ़े-लिखे शालीन
दोनों के चेहरे चिन्ता में लीन
जैसे हों त्रस्त, चिन्ता में ग्रस्त
आज के हालातों में कैसे रहें आश्वस्त
वार्तालाप का विषय - देश की वर्तमान राजनीति
देश में प्रचलित स्वार्थ भरी कूटनीति
दोनों वृद्ध हैं हैरान, परेशान
कितनों ने न्यौछावर की आज़ादी के लिये जान
क्या समाज क इस अवस्था के लिये
क्या देश में व्याप्त इस अव्यवस्था के लिये
एक बोला - दोस्त क्या बतायें, क्या कहें
हर शाख़ पे उल्लू बैठा है, अंजाम-ए-गुलिस्ताँ क्या होगा
हाँ भैया - हर कुर्सी पे उल्लू बैठा है
अंजाम-ए-हिन्दोस्ताँ क्या होगा
कौओं और गिद्धों से घिर कर कैसे गायेंगे हम
'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा'
आज तो भय और कुण्ठा से ग्रस्त हर आदमी कहता है
प्रभु बचा रहे यह देश हमारा
हमें कभी न कहना पड़े -
अंजाम-ए-हिन्दोस्ताँ क्या होगा?
○○○

आये न आये

जो भी करना है वो कर लो आज ही
आज का दिन ही है तुम्हारे पास
क्या पता कल कोई दिन आये न आये
और तुम्हारे पास कुछ भी बच न पाये
समय रहते पूर्ण कर लो लक्ष्य अपने
हो सके तो कभी न छोड़ो कोई अधूरी आस
बड़ों ने तो हमेशा सिखाया
आज का काम कल पर मत छोड़ो
आओ बन्धु जो भी करना पूरा कर लें आज
किसी डर से हम न करें पलायन
खुले रहें सदैव बुद्धि के वातायन
कुछ अच्छा कर जाओगे तो बनोगे सर दे ताज
जीवन का पल-पल है मूल्यवान
क्यों न उन्हें जी कर करें कुछ कल्याण
स्वप्न देखना कभी न तजना, न रहना कभी उदास
हर सवेरा 'आज' होगा हर सुबह लायेगी प्रकाश
बीता समय वापिस नहीं आता
तो क्यों न कुछ अच्छे काम करके
यादों में सँजोकर उसे रख लें अपने पास
जी लें हर आज को जी भर कर
क्या पता कल की सुबह आये न आये
○○○

बरसी कारी बदरिया

घिर-घिर आई कारी बदरिया
लेकर आई कारी चदरिया
ओढ़ा दी धरती को लाकर
निखरी धरती उसको पाकर
बरसी कारी-कारी बदरिया
बनकर श्वेत-श्वेत बूँदनियाँ

सरसी धरती उन्हें परस कर
गले लगाया तरस-तरस कर
निखर गया धरती का आनन
हरियाया वन उपवन कानन

बरसी कारी-कारी बदरी
धरती हरी-हरी लहराई
दूर गगन में इन्द्रधनुष ने
सतरंगी धनु-ध्वज फहराई
झूम उठा मेरा मनवा भी
देख-देख सतरंग लहरिया
घिर-घिर आई कारी बदरिया

○○○

विस्तृत महासागर

दूर आगे दूर तक
विस्तृत महासागर सघन
और ऊपर दूर तक फैला हुआ
निस्सीम सीमाहीन
अपने में मगन नीला गगन
दूर क्षितिज में बिखेरे रंग
सूरज कर रहा तैयारियाँ
अपने विलय की
अभी थोड़ी देर में बस
पलक की इक झपक में
ऐसा लगेगा
मानो सूरज कूद कर है
छुप गया सागर की गोदी में
क्षितिज के सारे रंग
घुल गये सागर की लहरों में
बूँद-बूँद, रंग समा गये
सागर के गह्वरों में
सागर ने उसे भर लिया
बाँहों के घेरों में
धरती और आकाश एक हो गये
सूरज और सागर एक हो गये
एक दूसरे में घुल-मिल कर
हुए मगन
विस्तृत महासागर सघन
निस्सीम सीमाहीन गगन
○○○

ख़ुदा क़िस्मत को बदल दे

रूठ गई है मेरी मंज़िल
छूट गईं हैं मेरी राहें
लगता अब दिल रहा नहीं दिल
सिर्फ़ रह गईं मेरी आहें

टूट गये हैं तार बीन के
सुर लय भी सब टूट गये हैं
शायद अब मन नहीं जोड़ता
टूट गए जो तार बीन के

फूट रहे सुर मन के अन्दर
पर होठों तक आ न पायें
शायद मेरे ख़ुदा ने मुझसे
छीन ली हैं वो अपनी पनाहें

रूठ गया कुछ छूट गया कुछ
कैसे अब मन को बहलायें
घूम रहा जो दिल दिमाग़ में
किससे कहें और किसे सुनायें

राहें चारों तरफ़ बंद हैं
बेतुक हो गये सभी छंद हैं
ओ ख़ुदा क़िस्मत को ब्रदल दे
तुझे बुलाऊँ फैलाकर बाँहें

ooo

अब क्या रहा है ज़िन्दगी में

मैं ज़िन्दगी से अपनी हूँ भाग क्यों रहा
बस जानता हूँ इतना मैं हर पल हूँ रो रहा

मेरी हर ख़ुशी पर क्यों ग्रहण की छाया-सी छा गई
शायद ये मेरी ज़िन्दगी की शाम आ गई

न जाने कैसे ज़िन्दगी वीरान हो गई
पल भर में ही ये ज़िन्दगी सुनसान हो गई

ये ज़िन्दगी से ज़िन्दगी ख़फ़ा क्यों हो गई
मेरी अपनी ही ज़िन्दगी बेवफ़ा क्यों हो गई

मेरी अपनी ख़ामोशी की आवाज़ कानों को खा गई
गोया कि मेरी ज़िन्दगी की रात आ गई

ये ज़िन्दगी भी कैसी अजीब शय ऐ दोस्त
जियो तो जीने भी न दे मरने भी न दे ऐ दोस्त

ये ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा कैसे बयाँ करूँ
जो छुपा के रखे ज़ख़्म उन्हें कैसे अयाँ करूँ

अब क्या रहा है ज़िन्दगी में कुछ पता नहीं
फिर भी ख़ुदा तू सुनता क्यों मेरी सदा नहीं

○○○

मामा का गाँव

आओ बचपन की बात बताऊँ मामा के गाँव की कहानी सुनाऊँ
गर्मी की लम्बी छुट्टी में मामा के गाँव जाते थे
कुँए के पानी से नहाते तालाब की सैर को जाते थे
गाँव में तब बिजली न थी लालटेन की रौशनी में खाते और गाते थे
मामी बड़ा प्यार थीं करतीं हर एक बात का ख़्याल थीं रखतीं
मामी के हाथों की रोटी, दाल, सब्ज़ियाँ खाते थे
अन्त में मिलती थी गुड़ रोटी थी से भरी गुलगुली रोटी
मामा हमको ख़ूब घुमाते जगह-जगह की सैर कराते थे
पास के गाँव में ले जाकर हमें कमल का तालाब दिखाते थे
तालाब में ढेरों फूल थे होते कमलगट्टे भी खिलाते थे
पास में उसके एक बड़ा छप्पर था
जिसमें ढेरों पान उगे थे लाइनों में ढेरों पान होते थे
खेतों में जब जाते थे मामाओं के बच्चों के साथ
हम सब मिलकर ख़ूब खेलते भागते पकड़ कर हाथ
आसपास के खेतों वाले कहते, खाओ चने का कच्चा साग
लहसन, नमक, मिर्च की चटनी के साथ खाओ तुम चने का साग
एक दूसरे से कहते दिल्ली वाली बिटिया की बिटियाँ हैं साथ
मेरी माँ थीं दिल्ली वाली बिटिया, मैं थी उस बिटिया की बिटिया
बाग़ों में आम-जामुन के पेड़ थे और अनेकों फल थे उगाये
बेर करौदे भी थे खाये वो दिन कैसे जायें भुलाये
माँ के साथ गाँव के हर घर में जाते, लड्डू, बरफ़ी, रबड़ी खाते
बैलगाड़ी पर होती थी सवारी छनक-छनक थे घुँघरू बोलते
मामा के बच्चे और हम सब हँसते, बोलते, गाते, डोलते
छुट्टी ख़तम कर दिल्ली आते अपने कामों में लग जाते
अब तो मैं हूँ बड़ी हो गई पर वह बचपन कैसे भुलाऊँ
आओ बचपन की बात बताऊँ मामा के गाँव की कथा सुनाऊँ

हम ख़ुद के हाथों छले गये

यादों के पक्के धागों की
उलझन में उलझते चले गये
कैसे सुलझायें हम उलझन
हम तो ख़ुद से ही छले गये

साँसों की लय पर गाते थे
हम रोज़ तराने यादों के
रातों में सपने आते थे
कुछ क़समों के कुछ वादों के

ढूँढा करते थे बीते दिन
हम आसमान के तारों में
अपनी क़िस्मत पढ़ते रहते थे
हम सूरज चाँद सितारो में

यादों की बारातों के संग
ख़ुद को बहलाया करते थे
जो याद आते थे हम उनकी
यादें सहलाया करते थे

पर आज हमें अहसास हुआ
क्या पाया हमने यादों से
क्यों ख़ुद को धोखे में रखा
झूठी क़समों और वादों से

जाने वालों ने चुपके से
मुँह को फेरा और चले गये
हम उलझे उनकी यादों में
ख़ुद के ही हाथों छले गये

○○○

पथ जीवन धारा का

रोने से अगर दुख मिट जाते
तो सब रोते ही रहते
फिर संघर्षों में तप-तप कर
दुख दर्द भला हम क्यों सहते

किन्तु पथ जीवन धारा का
बन्धु बड़ा होता विचित्र
कुछ पता नहीं कब कोई शत्रु
कब कोई बन जाता है मित्र
कब कोई फूलों के बदले
दे काँटे हो जाता अदृश्य
फिर पानी निराशा के क्षण में
इक ज्योति प्रकट होती है दिव्य

विश्वासघात के बदले जो
विश्वास जगाती अन्तर में
घनघोर निराशा के बदले
इक आस जगाती है मन में
ऐसे ही जब-जब जीवन के
दुर्गम पथ पर डगमग होते हैं
दुख और नैराश्य की प्रतिमा बनकर
अपनी क़िस्मत पर रोते हैं

तब हमें प्रेरणा देने को
अपनी क़िस्मत से लड़ने को
हमका कोई मिल जाता है
जिसी वाणी को सुनते ही
तन-मन में जीवन भरता है

○○○

नये ख़्वाब

गर तुमने कभी देखे होते कुछ ख़्वाब हमारी आँखों में
मिल जाते सारे प्रश्नों के वो जवाब हमारी आँखों में

जब दिल से दिल की राह बने
इक डोर दिलों में बँध जाती
जब फूल दिलों में खिलते हैं
इक माला सी है गुँथ जाती
चेहरे पे नक़ाब लगाने से
दिल में बदलाव नहीं आता
कुछ रिश्ते होते रूहों के
जिनमें अलगाव नहीं आता
है नहीं ज़रूरी ख़ून के ही
रिश्ते सच्चे रिश्ते होते हैं
कुछ अनजाने, अनजाने में
मिलते जो फ़रिश्ते होते हैं
तुम कभी समझ न पाओगे
अंदाज़ हमारी आँखों के
तुम काश कभी तो पढ़ पाते
कुछ भाव हमारी आँखों के
तो जन्नत बन जाती ज़मीन
खिलते गुलाब इन आँखों में
लगता कि जैसे छुपा लिया हो
मुझे ख़ुदा ने पाँखों में

दुनिया भर के सारे जवाब होते हैं हमारी आँखों में
जो पढ़ पाते तो भर देते नये ख़्वाब हमारी आँखों में

○○○

आँखों में छा गई निंदिया

निंदिया को तोरी झुलना झुलाऊँ
गा-गा के लोरी तुझको सुलाऊँ
सोने के दिन और चाँदी की रातें
दादा की गुन-गुन दादी की बातें
उन सबकी बातें गा कर सुनाऊँ

एक था राजा एक थी रानी
कितनी पुरानी है ये कहानी
राजकुमारी से तुझको मिलाऊँ
गा-गा के लोरी तुझको सुलाऊँ

परियों के देश से परियों का आना
रात को आना सुबह भाग जाना
उनकी कहानी में उनको बुलाऊँ
गा-गा के लोरी तुझको सुलाऊँ

चंदा और तारों की बारात आई
सपनों में खो जा भली रात आई
तुझको सुला कर मैं मुस्कुराऊँ
गा-गा के लोरी तुझको सुलाऊँ

सोने के देश से आ गई निंदिया
मुनिया की आँखों में छा गई निंदिया
मुनिया की निंदिया पे बलि-बलि जाऊँ
गा-गा के लोरी उसको सुलाऊँ

○○○

मिलकर जग जीत लिया

पलक कर उसने पुकारा जब उसे
ठुमकता-ठुमकता वह उस ओर चल पड़ा
हुलस कर उठाया उसने जो अंक में
लिपट कर वह माँ के अंक में विहँस पड़ा
कैसा यह नाता है माँ और शिशु का
दोनों को इक दूजे में सारा जग मिल गया
एक की आँखों में प्यार ही प्यार
दूसरे की आँखों में विश्वास ही विश्वास
पूर्ण हुई दोनों की आस
प्यार और विश्वास ने
मिलकर जग जीत लिया
नाक ने जन्म लेते ही पहचान ली माँ की सुगन्ध
कानों ने पहचान लिया माँ का हर क़दम
शरीर ने महसूस किया माँ का स्पर्श
जन्म के साथ ही माँ बन गई बच्चे की आदर्श
क्या कोई कर सकता है जो माँ ने किया
प्यार और विश्वास ने मिलकर जग जीत लिया

ooo

मिली जीवन रेखा

जीवन की सूनी राहों में
जब भी पीछे मुड़कर देखा
दूर-दूर तक सन्नाटा था
कहीं न थी जीवन की रेखा

जीवन के इस चक्रव्यूह में
फँस कर कोई निकल न पाये
जैसे डूबा बीच भँवर में
कोई थाह न जल की पाये

जैसे धँसता जाता कोई
नीचे से नीचे दलदल में
वैसे मानव फँसता जाता
जीवन की थोथी हलचल में

जैसे दबता जाये कोई
मरुथल की रेती के नीचे
कैसे फिर जीवन बगिया को
कोई अमृत जल से सींचे

यूँ ख़ामोश वीरानों में ही
कट जाता जीवन कब सारा
जान न पाये भोला मानव
क्या जीता उसने क्या हारा

इस सन्नाटे से निकल सका जो
उसने कभी न पीछे देखा
वीरान ख़ामोशी कहीं न थी
हर ओर मिली जीवन की रेखा

○○○

न शिकायत कोई

न कोई तुमसे गिला और न शिकायत कोई
मैं तो बस अपनी ही तक़दीर को तक कर रोई

कहने को बहुत कुछ था तुमसे मगर कह न सके
कह न पाने का दुख भी तो मगर सह न सके

कितने जज़्बात निकल पाये न जो दिल से कभी
कैसे हालात सँभल पाये न जो हमसे कभी

कितने आँसू थे जो रात में चुपचाप पिये
दिल में जो ज़ख़्म थे खुद अपने ही हाथों से सिये

जान न पाये कि दुनिया से लिया क्या और दिया क्या
ढूँढते थे कोई लम्हा है ख़ुशी से भी जिया क्या

एक सवाल जिसका जवाब न मिल पाया कभी
मैं तो हैरान हूँ क़िस्मत कहाँ जा कर सोई

न कोई तुमसे गिला और न शिकायत कोई
मैं तो बस अपनी ही तक़दीर को तक कर रोई

○○○

ख़ुद से ही थक गये हम

कैसी ये बेबसी ये लाचारियाँ हमारी
कोई समझ न पाया मजबूरियाँ हमारी
हम तो नहीं हैं दुश्मन अपनी ही ज़िन्दगी के
फिर भी सितम क्यों करते हम अपनी ज़िन्दगी पे
पल-पल पे ख़ुद को रोका पल-पल पे ख़ुद को मारा
फिर भी ख़ुदा न आया बनकर मेरा सहारा
कह-कह के ख़ुद की बातें ख़ुद ही से थक गये हम
कोई न बाँट पाया तन्हाइयाँ हमारी
चाहा था ज़िन्दगी से थोड़ा सा प्यार हमने
ऐसा भी क्या था माँगा इतना उधार हमने
हमने भी जीना चाहा था ज़िन्दगी के कुछ दिन
सोचा नहीं कटेगी ये चाँद तारे गिन-गिन
फिर चाँद तारों ने भी दे दी अँधेरी रातें
कुछ और बढ़ गईं तब तारीकियाँ हमारी
सबको दिये उजाले ख़ुद सह लिये अँधेरे
अपने लिये समेटे बादल घने घनेरे
कुछ प्यार सबसे चाहा कुछ प्यार सबमें बाँटा
फिर क्यों चुभाया सबने यूँ हमारे दिल में काँटा
जिन पर लुटा दी हमने अपनी ये ज़िन्दगानी
क्यों वे समझ न पाये क़ुर्बानियाँ हमारी
माँगीं बहुत दुआयें माँगा किये थे मन्नत
थोड़ा सा सुख था माँगा माँगी नहीं थी जन्नत
हम तो बहुत थे कायर हम बन न पाये अपने
हम ख़ुश रहे हमेशा ठुकरा के अपने सपने
क्यों अपने भी हमारे कमज़ोर इतने निकले
क्यों दूर कर न पाये वीरानियाँ हमारी ○○○

मुँह सी लिया

जनम दिन है आज मेरा
पर ख़ुशी किस बात की
भय लगे पल में मिलेगी
ख़बर किसी आघात की
ज़िन्दगी तो कट रही है
दर्द रंजो-ग़म के साथ
हाथ ख़ाली दिल भी ख़ाली
पास तो कुछ भी नहीं
ऐसा ख़ाली आदमी रह पाये
ऐ दिल किसके साथ
चाहने से ज़िन्दगी के
दिन बदल जाते अगर
तो भला हम छोड़कर जाते
ये दुनिया ख़ाली हाथ
हमने तो मुँह सी लिया था
जीते जी मरते रहे
कह न पाये हम किसी से
अपने ख़ाली दिल की बात
क्यों मेरी इस ज़िन्दगी को
काले अँधियारे ने घेरा
जनम दिन है आज मेरा
ooo

दर्द-ए-दिल का हाल

दोस्त अब क्यों पूछते हो दर्द-ए-दिल का हाल
जब दिल ही रहा नहीं, तो फिर दर्द कैसा?

मालामाल थे हम ग़म की दौलत से
ये किसने लूट लिया ख़ज़ाना मेरा

बातें तो बहुत सी हैं कहने के लिये
पर जीभ पे ताले हैं और दिल में अँधेरा

बड़े नाज़ से जिस ग़म को पाला था बरसों
पल भर में लूट कर ले गया कोई लुटेरा

दुख, दर्द, रंजो-ग़म मेरी अपनी चीज़ें हैं
क्यों जाल उनपे डाले भला कोई मछेरा

दिल भी गया दर्द गया हम हुए बेहाल
हाँ मैं जैसा था अब रहा नहीं वैसा

दोस्त अब क्यों पूछते हो दर्द-ए-दिल का हाल
जब दिल ही रहा नहीं तो फिर दर्द कैसा?

○○○

मैं तो मुरली हूँ

मैं तो मुरली हूँ मुझको बजा लो सनम
अपने होठों पे मुझको सजा लो सनम

मैं तो बस बाँस की नन्ही-सी पोर थी
तेरे हाथों में आकर बनी बाँसुरी
ये ही तेरे मेरे बीच की डोर थी
बाँसुरी बनके हाथों में तेरे रही
एक दिन क्यों अचानक से छोड़ मुझे
बाँस से जैसे फिर से है तोड़ा मुझे
मैं जड़ें छोड़कर फिर से उगने लगी
नेह से तेरे हाथों में सजने लगी

अब न तजना तुम कुछ भी सज़ा दो सनम
मैं तो मुरली हूँ मुझको बजा लो सनम
तुम कन्हैया मेरे बावरी राधा मैं
बाँसुरी में बाँधा हमारा बँधा धागा है
डोरी साँसों की है बाँसुरी से जुड़ी
डोर युग-युग तक पक्की बना लो सनम
मैं तो मुरली हूँ मुझको बजा लो सनम

○○○

रतजगे-सा क्षण

क्यों कभी-कभी कोई क्षण
रतजगे-सा समा जाता है आँखों में
जिसकी यादें सिमट जाती हैं
नेह बनके पाँखों में
जिसके याद आने पर
शहनाई सी बज उठती है दिल में
कैसा था वह क्षण
जो बस गया बनकर
तन्हाई-सा दिल में
कभी फूल बनकर
महक उठता है
कभी शूल बनकर
खटक उठता है
बात तो क्षणभर की ही थी
क्यों ज़िन्दगीभर सताती रही
कभी रुलाती रहीं
जिसकी यादें कभी हँसाती रहीं
क्यों कोई क्षण बंद हो जाता है
क़ैदी बनकर दिल की सलाखों में
रतजगा बनकर समा जाता है आँखों में
○○○

शायद वह आये

अधखुली आँखों में
अधूरे सपने छुपाये
बोझिल पलकों में
अश्रुओं पर विराम लगाये
बार-बार बस यही सोचती है
शायद वह आये
नींद आँखों से कोसों दूर
मन में चिंता, भय, आशंका
सपने हो जायें न चूर
बीत रहे दिन पंख लगाये
जीती है बस एक आस पर
शायद वह आये
दिन कट जाता
रात आ जाती
यूँ ही ज़िन्दगी कटती जाती
थरथराये अधरों से कहती
मेरे जीवन की संध्या में
एक बार
शायद वह आये
ooo

तू ही तू है

देकर जो ग़म तू ख़ुश है
वो ग़म तो ग़म नहीं
यूँ तेरे देने में कुछ
ज़्यादा या कम नहीं
साँसों की गिनतियों में
तू ही तो बोलता
कितनी गईं कितनी बचीं
है तू ही तौलता
रुक गई गिनती तेरी
तो दम में दम नहीं
कैसा अजीब सिलसिला
सरकार है तेरा
ज़िन्दगी के साथ ही
मौत का परवाना
दरकार है तेरा
बस इसके बाद
तू ही तू है
हम तो हम नहीं
तूने दिया बहुत दिया
शिकायत कोई नहीं
आब-ए-हयात हमको दिया
इनायत तेरी रही
जो हमने किया हमको मिला
तेरा सितम नहीं
जब साथ तू हमारे
तो ग़म भी ग़म नहीं

○○○

मेरा सवेरा

किस क़दर तन्हा हैं हम कहें कैसे
कोई साया तलक नज़र नहीं आता
ख़ाली आसमाँ में हमें जैसे
कोई तारा नज़र नहीं आता
तिश्नगी इस क़दर बढ़ी जैसे
बिना पानी फँसा है कोई सहरा में
ज़िन्दगी ख़ुद पे ही हँसी कैसे
राज़ इसमें भी कोई गहरा है
कैसे बतायें हम तुमको
यह रंग काला है या सुनहरा है
हमारी आँखों, सोच पर
दिल और दिमाग़ पर
बहुत कड़ा पहरा है
तड़पते रहते हैं
बिना पानी की मछलियों की तरह
उफ़ कितना निर्दयी
ये मछेरा है
कहते हैं रोज़ काली रात के बाद
आता दिन सुनहरा है
फिर हमारे चारों तरफ़
क्यों अँधेरा है
कब ख़त्म होगी ज़िन्दगी की
लम्बी अँधियारी काली रात
या ख़ुदा खोया कहाँ
मेरा सवेरा है
○○○

प्राणहीन रिश्ते

गहरे रिश्तों के दिये ज़ख़्म भी बहुत गहरे होते हैं
मन से जुड़े रिश्तों को कभी-कभी न जाने क्यों
लोग केवल शब्द बना देते हैं
बिना स्नेह के बने प्राणहीन रिश्ते
वैसे ही होते हैं जैसे एक स्नेहहीन दीपक
जो दीया होते हुए भी प्रकाश नहीं देता
ये रिश्ते न टूटते हैं न घुटते हैं सिर्फ़ लूटते हैं
इन गहरे रिश्तों के बीच गहरे अँधेरे भी होते हैं
कभी स्नेह प्रेम की राह पर संदेहों के पहरे होते हैं
मन में कुछ और होता है चेहरे पर अपनेपन का आवरण
कोई नहीं कर पया इन अपनों के मन का आकलन
एक-एक रिश्ते के न जाने कितने चेहरे होते हैं
किस रिश्ते से क्या लाभ उठाना चाहिये
किस रिश्ते पर घृणा और किस पर ढेर-सा
झूठा प्यार लुटाना चाहिये
कैसे नाख़ूनों से माँस अलग नहीं होता जैसी
पुरानी कहावतें तो झुठलाना चाहिये
काश! ये गहरे रिश्ते गहरे ही रहते
इनमें गहरी गहराइयाँ होतीं
तो घर परिवार में न भय न शंका
न नफ़रत न तन्हाइयाँ होतीं
ooo

बढ़ी या घट रही है ज़िन्दगी

क़तरा-क़तरा लम्हा-लम्हा कट रही है ज़िन्दगी
टुकड़ा-टुकड़ा तन्हा-तन्हा बँट रही है ज़िन्दगी

आती जाती साँस हर दम इक संदेशा दे रही
आती जाती साँस के संग छँट रही है ज़िन्दगी

जी ले हर पल जो मिला ये लौटकर न आयेगा
देख ले कैसे ये पल-पल लुट रही है ज़िन्दगी

क्यों अहं में डूब कर है ज़िन्दगी को जी रहा
कोई इक है जिसके आगे झुक रही है ज़िन्दगी

चलते जाना, चलते जाना ज़िन्दगी का नाम है
न कभी कहना भला क्यों रुक रही है ज़िन्दगी

साल बढ़ते जा रहे हैं साँस घटती जा रही
समझ न आये बढ़ी या घट रही है ज़िन्दगी

जी के मरते मर के जीते खेल खेलें उम्र भर
या तमाशा बन गये हम या तमाशा ज़िन्दगी

○○○

कचरा

उस दिन आये एक मित्र घर हमारे
बड़े परेशान से दिख रहे थे बेचारे
साथ में पत्नी और युवा पुत्र भी थे
पर सबके चेहरे उतरे-उतरे से थे
पंखा चलाया ठंडा पानी पिलाया शान्त किया उन्हें
फिर प्यार से पूछा कि क्या तकलीफ़ हैं उन्हें
भाई साहब क्या बतायें आपको
आप तो जानते हैं हमारे परिवार को
मेरे माता-पिता भाई-बहन सब रहते हैं घर में
यह संयुक्त परिवार मेरे जीवन का आधार है
मेरा बेटा सबकी आँख का तारा है
सबको प्राणों से अधिक प्यारा है
बड़ी उत्साह से शादी के लिये देखने गये लड़की
सब ठीक था पर उसकी एक बात बड़े ज़ोर से खटकी
लड़की लड़के को लेकर गई अपने घर के अन्दर
एक बता बताइये मिस्टर पूरब सिकन्दर
आपके साथ जो लोग आये हैं
उनके अलावा और कितना कचरा है घर में
सुनकर मेरा बेटा रह गया हक्का-बक्का
मेरे अपनों को कह रही है कचरा
उसने भी मारा एक छक्का
जो हैं उनके अलावा भी घर में आने वाला था
एक नया कचरा, किन्तु अब उसके लिये जगह नहीं है
पर भाई साहब मैं बहुत परेशान हूँ
क्या आज की पीढ़ी के लिए बुजुर्ग सिर्फ़ कचरा हैं
ये कैसा व्यवहार है, यह कैसा नज़रिया है? ○○○

देखो दृष्टिपथ विस्तृत करके

बन्धु अपने दृष्टिपथ को विस्तृत करके
देखो हर हृदय में अमृत भर के
बन जाओ महाभारत के कर्ण की माँ राधा
बन जाओ कृष्ण कन्हैया की मैया यशोदा
दुनिया के हर बच्चे में भगवान नज़र आयेंगे
गोद में उठाओगे तो नन्हे नन्दलाल नज़र आयेंगे
बच्चों को निश्छल आँखों में निष्कपट हृदय में
मिलेगा वही स्नेह जो है विधाता हृदय में
पौधों में झाँकती नई-नई कोंपलों को
नन्ही-नन्ही कलियों को जब देख लें
झंकृत हो उठते हैं अन्तस् के तार
इनसे ही रहती है उपवन में बहार
जब भी पशु पक्षियों के बच्चों को देखते हैं
अपने बच्चे कैसे याद आ जाते हैं
बाँट दो इन सबमें थोड़ा-थोड़ा प्यार
बज उठेगी तुम्हारे दिल की सितार
देखो तो नन्द-यशोदा राधा बनके
प्रकृति का सारा प्यार मिलेगा तुम्हारा बनके
मित्र नन्हों को अंक में भर के
देखो हर ओर दृष्टिपथ विस्तृत करके

ooo

जीवन की दौड़

ये कैसा ज़िन्दगी में मेरी आ गया है मोड़
आकर यहीं पर रुक गई मेरी ज़िन्दगी की दौड़
राहें हुईं अवरुद्ध लक्ष्य कहीं खो गये
कैसे करें विश्वास सत्य कहाँ खो गये
ये मातृभूमि मेरी आँसू बहा रही
बलिदान देने वाली वृत्ति कहाँ गई
यथा राजा तथा प्रजा का तमाशा चल रहा
अपने नेताओं के क़दमों पर ज़माना चल रहा
बैठे जो कुर्सी पर उन पर न रहा विश्वास
क्यों नहीं अब बन रहे गाँधी, आज़ाद, सुभाष
चल रहे ईमान पर जो उनको जीने दे न कोई
दे रहे धोखा जो उनकी आत्मा जा कहाँ सोई
मातृशक्ति पर भी हमले हो रहे लज्जित हैं हम
इससे घृणित और क्या होगा कह नहीं सकते हैं हम
स्वार्थ में अन्धे हुए जो कर रहे विश्वासघात
बन रहे जयचंद देते मातृभूमि को आघात
जनता के टैक्सों के पैसे सूटकेसों में कहाँ जाते
नहीं समझ में आता कैसे हजम उन्हें वो कर पाते
व्यभिचारी और बलात्कारी खुले आम है घूम रहे
चोर डकैत अपहरणकर्त्ता अपनी विजय पर झूम रहे
देख के ये सब मुझको लगता दूँ अब दुनिया छोड़
ये कैसा मेरी ज़िन्दगी में आ गया है मोड़
किन्तु पुरखों का ऋण है चुकाना दुनिया को कैसे दूँ छोड़
करना अभी बहुत कुछ मुझको कैसे रुके जीवन की दौड़

ooo

दानी काले मेघा

काले मेघा बरस-बरस कर धरती को सरसाते
दूर-दूर से लाकर पानी धरती पर बरसाते
कभी न करते पक्षपात सबको देते हैं पानी
लेकिन ये आवारा बादल करते हैं मनमानी
कहीं पे जाकर इतना बरसें के आते हैं बाढ़
कहीं से चुप-चुप आगे बढ़ते छोड़ के सूखे झाड़
इनको देख कूकती कोयल नाच उठें सब मोर
आये काले-काले बादल मच जाता है शोर
जब ये आते नहीं समय से दिल में डर आ जाता
आसमान को देख कृषक है हाथ जोड़कर गाता
काले मेघा दे दे पानी, दे दे पानी, दे गुड़ धानी
तेरे घर में कमी नहीं है तू तो मेघा औघड़ दानी
फूल-पात सिर झुका-झुका कर खड़े हुए घबराते
दे दो मेघा थोड़ा अमृत हम तो मरते जाते
सुनकर सबकी विनती बदरा गरज-गरज कर आते
बिजली के संग ढोल नगाड़े ढम-ढम आयें बजाते
प्यासी धरती पीकर पानी हो जाती है मतवाली
वन-उपवन में मानव मन में छा जाती हैं हरियाली
सचमुच दानी काले मेघा नहीं किसी को तरसाते
काले मेघा बरस-बरस कर धरती को हैं सरसाते

○○○

चलते-चलते

कैसे-कैसे लोग कभी मिल जाते हैं चलते-चलते
कोई पल में अपने बनते कोई दुश्मनी दिखलाते हैं चलते-चलते
कोई सफ़र में मिल जाता है बन जाता है ऐसा अपना
जैसे जनम-जनम का नाता लगता जैसे सुन्दर सपना
कभी किसी से जुड़ जाते हैं बरसों बरस के नाते में
ख़ून का रिश्ता ही अपना है सब बेकार की बातें हैं
जैसे जाने किस बगिया का फूल गले का हार बने
वैसे कभी कोई अपरिचित मिलकर जीने का आधार बने
सखी सहेली मित्र बन्धु या किसी रूप में मिल जाते
दिल के रिश्ते बन जाते जब दिल से दिल हैं मिल जाते
कभी हँसी का, कभी दर्द का, कभी स्नेह का बनता जाता
जीवन के अनजाने मोड़ पर जाने कोई कब मिल जाता
कुछ ऐसे होते हैं जो पल भर के छोटे से सफ़र में
ऐसी यादें छोड़ के जाते जो लिपटी होती हैं ज़हर में
बन्धु छोटे से इस जीवन में दूर न होना मिलते-मिलते
स्नेह के बन्धन में जुड़ जाना जब मिलना तुम चलते-चलते

○○○

जीवन और संघर्ष

ज़िन्दगी है तो संघर्ष है
उत्कर्ष है तो अपकर्ष है
सुख है तो दुख भी है
ज़िन्दगी को केवल स्वर्ग नहीं
नर्क का नज़ारा भी देखना है
क्योंकि स्वर्ग है तो नर्क भी है
मानव को सब झेलना है
हमारे पुरखे कह गये हैं
जैसा बोओगे वैसा काटोगे
जो कमाओगे वही बाँटोगे
लेना देना साथ-साथ चलता रहता है
ईश्वर ने जीवन दिया
हमने जीवन को जिया
देखना है ईश्वर ने जो बुद्धि और शक्ति दी
उसका उपयोग कितना किया और कैसे किया
कर्म करना धर्म है
अकर्मण्यता अधर्म है
जीवन और संघर्ष
साथ-साथ उत्पन्न हुए
हर संघर्ष को जीत कर
हम कितने प्रसन्न हुए
कभी उत्कर्ष के बाद अपकर्ष भी आ जाता है
फिर अपकर्ष के बाद उत्कर्ष
दुख के बाद सुख भी देता है ईश
जीवन के साथ सदा रहता है उसका आशीष

○○○

अबला बन जा तू सबला

अबला अब बन जा तू सबला
बदल दे कवि की अब यह वाणी
'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी'
जब कवि ने यह बात कही थी
तब थी कुछ मानवता बाक़ी
कवि के सच्चे हृदय से निकली
वाणी पर सबकी श्रद्धा थी
तब समाज में कम थे दानव
अब रह गये हैं कम मानव
बहुत ज़रूरी है अब आगे
तुम अपनी पतवार सँभालो
महिलाओं की रक्षा के हित
अब तीखी तलवार उठा लो
चाहे घर हो चाहे बाहर अत्याचार जहाँ बहनों पर
सबके लिये है तुमको लड़ना जीवन में अब आगे बढ़ना
अत्याचार नहीं अब सहना भ्रूण को भी है ज़िन्दा रखना
कोई कन्या नहीं मरेगी जुल्मो-सितम अब नहीं सहेगी
अब अपनी रक्षा का बीड़ा बहनों तुम्हें उठाना होगा
बलात्कारियों को दुनिया से
दूर कहीं पहुँचाना होगा
न दहेज के लिये जले अब कोई अबला
बन जाओ चण्डी हे महिला
अबला अब बन जा तू सबला

ooo

सब्र रखो

सब्र रखो तो अँधेरी से अँधेरी रात भी कट जायेगी
सब्र रखो तो कुहर की अँधियारी रात भी छँट जायेगी
सब्र रखो तो सवेरे को तो आना ही होगा
घने से घने अँधेरे को तो जाना ही होगा
जल्दबाज़ी में किये गये काम बिगड़ जाते हैं
तेज़ी में किये गये फ़ैसलों से घर भी उजड़ जाते हैं
तेज़ी से बोलने में जीभ फिसल जाती है
बात ही बात में अनचाही बात निकल जाती है
सब्र से तोल कर बोलें तभी बनती हैं बातें
सब्र रखो तभी चैन से कटती हैं रातें
ज़िन्दगी के दिन तो हैं चाहे थोड़े
लेकिन हम कभी अपने फ़र्ज़ से मुँह न मोड़ें
आँधियाँ चाहें जितनी आयें
काले घनघोर मेघ घिर आयें
ज़िन्दगी में कुहास छा जाये
किन्तु डर जाने से कुछ नहीं होगा
वक़्त के मुताबिक़ जो भी हों बातें
उनमें हैं स्नेह के सुर घुल जाते
कुहास छँट के उजास आयेगी
ज़िन्दगी में एक नई आस आयेगी
सब्र का बाँध न टूटने पाये
ईश की आस न छूटने पाये
फिर अँधेरी से अँधेरी रात भी कट जायेगी

○○○

साँझ के धुँधलके में

साँझ के धुँधलके में
सघन अनुभूतियों के रेले
आ-आ कर मुझे भिगोने लगते हैं
श्वास प्रश्वास में
मेरे रक्त मज्जा माँस में
ये सघन अनुभूतियाँ घुल-घुल कर
मेरी आत्मा को भी
शामिल करना चाहती हैं अपने रेले में
मैं आत्मा में आत्मसात होकर
इन अँधियारे कोनों से निकल कर
रौशनी में आना चाहती हूँ
क्योंकि साँझ भी रोज़ आयेगी
अनुभूतियाँ भी हमले करेंगी
किन्तु अपनी जिजीविषा को
ज्वलन्त रखने के लिये
जीवन की सब बाधाओं को
मुझे दूर रखना है
अपनी दृष्टि के प्रकाश की ओर
सूरज और चाँद की ओर रखना है
अनुभूतियों के तिमिर को
अपनी जिजीविषा से हराना है
आत्मा में आत्मसात होना है
साँझ के धुँधलके में

ooo

वक़्त का मरहम

वक़्त के बदलने से उदास न हो दोस्त
वक़्त बुरा भी होता है और अच्छा भी
दोस्त की बेवफ़ाई पे उदास न हो दोस्त
दोस्त झूठा भी होता है और सच्चा भी

किसी एक की ग़लती की सज़ा सबको न मिले
सारा तो बुरा नहीं है यह समाज भी
भूलने होंगे शिकवे और गिले ऐ दोस्त
प्रेम जीता है कल और जीतेगा आज भी

आज बिगड़ा है वक़्त तो कल बन जायेगा
रात के बाद सुबह तो आती है ज़रूर
सबको ले करके साथ चलना है
छोड़ के शिकवे शिकायत और ग़ुरूर

काँटों के संग गुलाब खिलता है
उनके संग रहके मुस्कुराता है
फिर उसे उसकी वफ़ा का सिला मिलता है
काँटों से ले के विदा भगवान पे चढ़ जाता है

ज़ख़्म भर जायेंगे किसी दिन ऐ दोस्त
वक़्त ही उन पर मरहम सदा लगाता है

○○○

माँ की माया

मिलता तीनों लोकों का सुख मुझको
माँ के आँचल की छाया में
सभी देवता दिखते मुझको
अपनी माँ की मृदुल काया में
कितना प्यार भरा होता है
मेरी मैया की आँखों में
अपनी चिन्ता पल-पल देखूँ
अपनी मैया की आँखों में
ज़रा देर मुझको हो जाये
तो देखो मैया का हाल
सौ चक्कर बाहर के लगाती
बिन खाना-पानी बेहाल
मेरे खाने की चिन्ता में
व्यस्त रसोई में रहती है
सारी दुनिया की मिठास
माँ की रसोई में रहती है
एक यही कामना प्रभु से
मुझको इतनी शक्ति दे-दे
माँ को सारे सुख दे पाऊँ
मातृचरण की भक्ति दे-दे
मेरे सारे घर के सुख रहते
मेरी माँ की माया में
मिलता तीनों लोकों का सुख मुझको
माँ के आँचल की छाया में

○○○

तुम कहो कैसे जियें

जब चितायें जल रही हैं दिल के अन्दर कहो फिर कैसे जियें
जब चिंतायें डस रही हैं दिल को तो हम कैसे जियें
हो रहा हर तरफ़ अत्याचार हम कैसे जियें
भूल गये लोग आपसी व्यवहार हम कैसे जियें
हर तरफ़ है बोलबाला स्वार्थ का कैसे जियें
चक्र कैसा चल रहा है विषाक्त हम कैसे जियें
नारियों से हो रहा दुर्व्यवहार हम कैसे जियें
कन्याओं पर निर्दयी प्रहार हम कैसे जियें
काम रिश्वत के बिना न हो सके कैसे जियें
काम किल्लत के बिना न हो सके कैसे जियें
अपनों पर हो रहे हैं आघात हम कैसे जियें
अपने देश से हो रहा विश्वासघात हम कैसे जियें
हो रहे जयचंद पैदा तुम ही कहो कैसे जियें
हो रहा मातृभूमि का सौदा कहो कैसे जियें
जानबूझ कर ज़हर के प्याले कहो कैसे पियें
जब चिंतायें डस रही है दिल को तो हम कैसे जियें
कर सकें माँ भारती के लिये कुछ तो फिर हम जियें
शपथ लेते देश का कुछ भला कर सकें तो फिर हम जियें

○○○

मौन संवाद बन गया

दोनों के बीच पसरा मौन
संवाद बन गया
मैं हूँ कौन तुम हो कौन जैसा प्रश्न
अपवाद बन गया
आँखों ने आईना बनकर
दिल दिखा दिया
पलकों ने झपक-झपक कर
आँखें पढ़ना सिखा दिया
दिल में छुपरा गुलाम सच
आज़ाद बन गया
सुन रहे थे कान भी
मौन की भाषा
समझ रहे थे गुन रहे थे
भाषा की परिभाषा
कानों में रुनधुन का बाजा बज रहा
सृष्टि का कण-कण उन्माद बन गया
धरती और आकाश मिलने लगे थे
प्रेम और विश्वास बढ़ने लगे थे
मौन की शक्ति के
पंख लग गये थे
हर पल हर क्षण-क्षण
आह्लाद बन गया
दोनों के बीच पसरा मौन
संवाद बन गया
○○○

नियति का रुख़ मोड़ें

नियति के खेलों को अब तक
नहीं समझ पाया है कोई
नियति के पन्नों को अब तक
बन्धु पढ़ पाया न कोई
बरसों से जिसको संजोते
बिखर जाये सब एक ही पल में
जिसे तिजोरी में है छुपाते
पल में डूबे गहरे जल में
बुलबुलों में क़ैद जीवन
नियति ने छोड़ा है किसको
चल रहा है जो चाल अपनी
नियति ने मोड़ा है उसको
चल रहीं अठखेलियाँ
इतना सरल जीना नहीं है
ज़हर अमृत जो मिले
हँसकर उसे पीना सही है
किन्तु अपने यत्न को
डरकर कहीं न छोड़ देना
हो सके तो अपने साहस से
नियति का रुख़ मोड़ देना
ooo

अव्यक्त अभिव्यक्ति

मेरी सहेली भी कितनी अजीब है
बार-बार पूछती है मुझसे
तेरे पति तेरे कितने क़रीब हैं
प्रेम की परिभाषा
क़रीबी की परिभाषा क्या है, क्या इसे नापने का कोई पैमाना बना है
क्या प्रेम नापने का कोई प्रमाणपत्र होता है
भारी गहने, मँहगे कपड़े, बड़ा सा घर
कार या नौकरों का जमघट
या फिल्मी हीरो की तरह प्रेम का अभिनय
हँसती हूँ सहेली की बात पर
शब्दों या अभिनय में प्रेम की
अभिव्यक्ति कर पाना संभव नहीं
प्रेम तो अन्तर से अभिव्यक्त होता है
किसे प्रेम कहूँ इन सब उपहारों को
या उनके द्वारा छीले गये मटर प्याज़ के
छिलकों के ढेर को
या नल में पानी न आने पर
नीचे से पानी भरी बाल्टी न लाने की हिदायत पर
उनकी नीचे से लाई गई पानी की बाल्टियाँ
मेरी सारी थकावट दूर कर मुझे
अमृत में सराबोर कर देती हैं
मेरी रसोई के भोजन में रस घोल देती हैं
अन्तर्तम तक सरसा देती हैं
अव्यक्त प्रेम बरसा देती हैं
कितना प्रेम कितनी क़रीबी की परिभाषा क्या
इस अव्यक्त अभिव्यक्ति से बड़ी है ○○○

माँ क्या भूल हुई मुझसे

माँ क्या भूल हुई मुझसे
जो सबकुछ छीन लिया मुझसे
पंछियों सी स्वच्छन्द मैं विचरती थी
घूमती थी खेत, वन, उपवन में
सागर में तैरती थी, पेड़ों पर चढ़ती थी
फिर अचानक क्या हुआ माँ
जो पंख मेरे कतर डाले
माँ मैं तो थी नहीं उद्दण्ड अनुशासनहीन बेटी
जब कहा उठने को मैं उठी जब कहा बैठने को मैं बैठी
प्रथम आती रही पढ़ने में निपुण हो गई बुनने काढ़ने में
काम सारा मैंने सीखा जो भी तुमने सिखाया
फिर अचानक क्या हुआ मुझे कर दिया पराया
ढोल बाजों के संग मुझे विदा कर दिया
मेरा घर मुझसे जुदा कर दिया
जिस घर में मैं पैदा हुई
खेली कूदी बड़ी हुई
जिसके छत, कमरों और आँगन से
जुड़ी हुई हैं मेरी अनगिनत यादें
जिसकी दीवारों पर मैंने
कितने ही चित्र बनाये थे
बचपन में लगाई लकीरों के निशान
माँ तुमने ही मुझे दिखलाये थे
आँगन के पेड़ की चिड़ियों से
कितना लगाव था मेरा माँ

चिड़ियाँ भी उड़ गईं पेड़ों से
मैं भी चिड़ियों सी उड़ गई माँ
मैं तो थी तेरे आँगन की गैया
मुझे एक अनजाने घर में हाँक दिया
माँ तू न जाने इस क्षण में
कैसा ये कलेजा चाक हुआ
माँ कैसे सिर्फ़ एक दिन में
मैं बन गई इस घर की मेहमान
बेटी को यूँ पराया करना
क्या होता इतना आसान
जिस घर में भेजा है तुमने
वह भी नहीं है मेरा माँ
मुझको वहाँ यही सुनना पड़ता है
तेरा कुछ भी नहीं यहाँ
तू तो इस घर की कोई नहीं
तू दूसरे घर से आई है
तू सिर्फ़ यहाँ बाहर की है
तू सिर्फ़ यहाँ पर जाई है
माँ अपने ये जज़्बात बता
कैसे बयान करूँ तुझसे
तितलियों सी उड़ रही थी मैं
मेरी माँ
हुई क्या भूल मुझसे
जो सबकुछ छीन लिया मुझसे

ooo

चाँदनी रातें - काली रातें

याद कभी क्यों आ जाती हैं
कुछ अनजानी बीती बातें
कभी-कभी क्यों याद हैं आती
बरसों बीती काली रातें
क्यों तड़पाती हैं कभी-कभी वो बीती रातें
वक़्त गुज़र जाता है लेकिन
याद झकोरे आते-जाते
ज़ख़्म तो भर जाते हैं लेकिन
दाग़ अनोखे हैं दे जाते
जीवन की कड़वी यादों को
झुठलाना आसान नहीं
इन यादों से जुड़े पात्र भी
दो दिन के मेहमान नहीं
ये यादें तो वो अतिथि हैं
जो बिना बताये आ जाते हैं
कुछ पल कुछ दिन सुख देते हैं
रहते हैं आते-जाते हैं
यादों के ये झुंड कभी
बाराती बनकर हैं आते
करते शासन दिल दिमाग़ पर
पल-पल दिल को ख़ूब जलाते
हँस-हँस कर हैं हमें सताते
भूली बिसरी याद दिलाते
कटती यादों की यादों में
चाँदनी रातें काली रातें
याद कभी क्यों आ जाती हैं
कुछ अनजानी बीती बातें ○○○

अतिथि वर्षा रानी

उस दिन एक फ़िल्म देखी थी
बिन बादल बरसात
सत्य हो गई आज शाम को
उस पिक्चर की बात
दो दिन से इक धूल भरी आँधी ने घेरा डाला था
धूल भरे गुब्बारों से बादल ने फेरा डाला था
घर आँग में आँख कान में
धूल-धूल बस धूल-धूल थी
धूल से होली खेल रहा था
यह मौसम की बड़ी भूल थी
तभी अचानक नव सुगन्ध ले झोंका एक हवा का आया
धूल भरी आँखों को नमी दी नाक में सोंधी ख़ुशबू लाया
चमत्कार से फिर पल भर में
घिर आये बादल काले-काले
रिमझिम-रिमझिम टप-टप-टप-टप
टपके अमृत रस के प्याले
बिन मौसम वर्षा रानी का सबने किया अतिथि-सा स्वागत
बिना तिथि के जो आईं थीं मान्नीया थी वो अभ्यागत
ख़ुशी बाँटने आई वर्षा
घर आँगन जल बरसाया
प्यासी धरती का मन सरसा
जन मन गण को हर्षाया
आज तो वर्षा जमकर बरसी हुई बिना बादल बरसात
सत्य हो गई आज शाम को उस पिक्चर की बात
उस दिन एक फ़िल्म देखी थी बिन बादल बरसात
अतिथि वर्षा रानी आई लेकर बादल साथ ○○○

राष्ट्रगान हम सबका जीवन

हम भारत के वीर बालगण
न झुकते हैं न रुकते हैं
न्यौछावर करते तन-मन-धन
निर्भय हम आगे बढ़ते हैं

चमके बिजली गरजें बादल
आँधी और तूफ़ान आ जायें
शपथ हमें अपने भारत की
कभी किसी से न डर जायें

कोई शत्रु आँखें दिखलाये
कोई लालच से फुसलाये
कभी न हम भय से घबरायें
कभी न लालच में फँस जायें

पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण तक
एक हमारा भारत देश
चाहे अलग-अलग भाषा है
चाहे भिन्न-भिन्न परिवेश

भारत के जन-जन के मन में
एक गान है जन-गण-मन
मधुर एकता का परिचायक
राष्ट्रगान सबका जीवन

लिये तिरंगा हाथ में हम सब
प्रगति पथ पर बढ़ते जायें
रक्षा करें सदैव देश की
सम्मानित छवि गढ़ते जायें

○○○

जीनव खिल गया

खिली-खिली-सी धूप-सा जीवन खिल गया
जब तेरा नेह भरा साथ मुझे मिल गया
जीवन भर मिलते रहे बिछड़ते रहे हज़ारों
जीवन भर अपने बन बिगड़ते रहे हज़ारों
फिर भी न जाने क्यों हज़ारों की भीड़ में
एक अकेलापन डसता रहा प्यारों की भीड़ में
चलता रहा जीवन बस एक ही आस थी
कभी न रहे जीवन में कमी विश्वास की
लेकिन नियति ने दिया कुछ और ही सिला
सबकुछ मिला जीवन में विश्वास ही न मिला
जीवन चक्र में हम पल-पल घिसते रहे
चक्की के दो पाटों में गेहूँ और घुन से पिसते रहे
विडम्बनापूर्ण रहा जीवन सिसकती रही ज़िन्दगी
घिसती रही ज़िन्दगी पिसती रही ज़िन्दगी
हम भी चलते रहे जीवन भी चलता रहा
ज़िन्दगी का दरिया निरन्तर बहता रहा
फिर क्यों मेरे आसपास का पानी ठहर गया
क्यों भँवर का चक्र और अधिक गहर गया
क्यों अपनत्व का अभाव जीवन को ग्रसता रहा
मेरे व्यक्तित्व को कोई चुपके से डसता रहा
शायद भीड़ में अकेलापन इसी को कहते हैं
इस भव समुद्र में सब अकेले ही बहते हैं
अन्तर के छिद्र रिसने लगे थे, साँसों के सुर भी सिसकने लगे थे
बन्धु तेरा आना था मन्द समीर का झोंका
जैसे अब न मिलेगा और कोई धोखा
जैसे कोई अचानक से घाव मेरे सिल गया
खिली-खिली धूप-सा जीवन खिल गया ○○○

जो थे अपने

जीवन की कँटीली राहों में चलते-चलते जो बिछड़ गये
वो शायद फिर कभी न मिले क़िस्मत के लेखे कैसे बिगड़ गये
क्या-क्या अरमान पिरोये थे देखे थे कैसे-कैसे सपने
फिर कैसे माला टूट गई सब बिखर गये जो थे अपने
माला के सारे मनके गिरकर सब बिखरे यहाँ-वहाँ
जो बिछड़-बिछड़ कर चले गये जाने हैं पहुँचे कहाँ-कहाँ
पल-पल, छिन-छिन, ढलते-ढलते पल सुबह शाम बन जाते हैं
सुबह शाम ही चलते-चलते रात-दिवस बन जाते हैं
रात्रि-दिवस भी ढलते-ढलते आगे बढ़ते जाते हैं
बीत-बीत कर सब दिन आगे मास-वर्ष बन जाते हैं
लेकिन बिछड़ के जाने वाले नहीं लौट कर आते हैं
वक़्त के संग-संग रीत रहा मानव का यह सारा तन-मन
पिघल-पिघल जाता मानव मन यूँ ही कटता जाता जीवन
संग-संग रहे दिया बाती से जाने कैसे दूर हो गये
राहें सम करते-करते सब सपने कैसे चूर हो गये
महल, अटारी, घर का आँगन न जाने कब उजड़ गये
नये घोंसलों में रहने के नये पंछी भी सब उड़ गये
लगे थपेड़े वक़्त के ऐसे सारे अपने बिछड़ गये

○○○

सपनों की माला

बचपन से ही आदत बन गई
मै सपनों की डोर से बँध गई
बनाती रहती थी सपनों की माला
सजाती रहती थी उनमें उजाला
सपने छोटे-छोटे सपने बड़े-बड़े
देखती रहती थी सोते-सोते
जागते - जागते, उठते - बैठते
चलते - चलते, खड़े - खड़े
सपनों की माला आज भी बन रही है
जब-तब एक नया मोती और जुड़ जाता है
धागे का रुख़ कभी इधर कभी उधर मुड़ जाता है
धागा मोती से और मोती धागे से बिछड़ जाता है
साथ ही उन्हें पूरा करने की कोशिशें भी चल रही हैं
पूरा होने के सुख की कामनायें मचल रही हैं
कुछ सपने टूट जाते हैं कुछ रह जाते हैं अधूरे
कुछ टूटते-छूटते आगे बढ़कर हो जाते हैं पूरे
सपने देखना अच्छी बात है, उनका पूरा होना भी अच्छी बात है
मंज़िल की तलाश किसे नहीं होती
लक्ष्य तक पहुँचने की चाह किसे नहीं होती
लेकिन सपने सजाने के साथ याद रखना है कि सपने तो सपने ही होते हैं
सारे सपने पूरे नहीं होते कुछ टूट भी जाते हैं
कुछ पूरा होते-होते राह में छूट जाते हैं
पर एक सपना टूटने से जीवन तो नहीं टूट जाता
एक मोती टूटने पर माला छोड़ नहीं देते हैं
नया मोती पिरो कर उसे जोड़ देते हैं
अपने सपनों की माला को आगे बढ़ाते रहना ही जीवन है
एक हार मानकर शेष सपनों को भूल जाना मरण है ○○○

विश्वसनीय आधार

ज़िन्दगी चलती रही हम ज़िन्दगी की धार में बहते रहे
जो मिले सुख-दुख उन्हें चुपचाप सहते रहे
जिधर दृष्टि डाली बस इक शून्य-सा था गहरा रहा
हर तरफ़ कुण्ठाओं का सागर था इक लहरा रहा
कोई लालच में घिरा था स्वार्थ में कोई फँसा
सा किसी को द्वेष ईर्ष्या जैसे नागों ने ग्रसा
'सत्यमेव जयते' का नारा सिर्फ़ नारा बनकर रह गया
शायद ही किसी ने इन अमूल्य शब्दों को अपनाने का यत्न किया
यूँ तो सत्य जैसी कोई तपस्या नहीं
झूठ जैसी कोई समस्या नहीं
महात्मा कबीर ने साँच को तप कहा और झूठ को पाप
फिर भी क्यों लोग सत्य तज कर करते हैं झूठे प्रलाप
हर रिश्ते में, परिवार में, समाज में होते हैं आघात
मातृभूमि के साथ भी लोग करते हैं विश्वासघात
आश्चर्य है कि इतने स्वार्थी और भ्रष्टाचारी
लालची, अत्याचारी, बलात्कारी और दुराचारी
लोगों के रहते हुये भी ज़िन्दगी चलती जा रही है
काश कोई देवदूत आकर थाम ले इस डूबती नौका की पतवार
मिल जाये सबकी ज़िन्दगी को एक विश्वसनीय आधार

○○○

ज़िन्दगी कितनी अनजानी है

सपनों का वास्तविकता में परिवर्तित हो जाना
जीवन्तता की निशानी है
यादों का हक़ीक़त बन जाना
ज़िन्दगी की रवानी है
अतीत, वर्तमान और भविष्य
सबमें छुपी एक कहानी है
दुनिया की बातों पर क्या जाना
दुनिया तो आनी जानी है
किस पर ऐतबार करें किस पर न करें
हर चीज़ यहाँ पर फ़ानी है
जिसकी क़िस्मत अच्छी है
उसकी हर चीज़ सुहानी है
जिसका भाग्य विधाता ने लिखा
उल्टी क़लम से
उसके लिये हर चीज़ बेमानी है
बड़ी अजब-ग़ज़ब चीज़
इन्सान की ज़िन्दगानी है
किसी के लिये एकदम अपनी
किसी के लिये बिल्कुल बेगानी है
जिसके सपने सच हो जायें
उसमें जीने की निशानी है
जिसके सपने टूट जायें
उसकी ज़िन्दगी दिवानी है
उफ़! यह ज़िन्दगी कितनी अनजानी है
ooo

किसको सुनायें हाल-ए-दिल

किसको सुनायें हाल-ए-दिल कहने को हम तरस गये
हमदर्द काँधे की आस में आँसू बरस-बरस गये

कितने ही ग़म छुपाये हैं दिल के हर एक कोने में
बेचैन दिन में रहते हैं चैन न रात सोने में

ज़िदगी की इस किताब में लिखी जो हमने दास्ताँ
लिखने लगे क़लम से जो कम पड़ेंगे आस्माँ

दिल की किताब में जो लिखा उसको हम पढ़ न पायेंगे
हाथों की इन लकीरों से क़िस्मत को गढ़ न पायेंगे

जितनी अजीब ज़िन्दगी उतना अजीब हाल-ए-दिल
किसको सुनायें हाल-ए-दिल कहने को हम तरस गये

हिम्मत कहाँ से लायें हम जीने की ऐसे दर्द में
हम ढूँढते सुकून हैं एक किसी हमदर्द में

कोई हमें समझ सके इतना ही चाहते हैं हम
चाहते अब कोई आये आकर हमें सँभाल ले

कभी तो कोई प्यार से पूछ हमारा हाल ले
पर कोई आये क्यों भला हम में ऐसा है ही क्या

अपने अजीब हाल पर खुद ही से हम बहस गये
किसको सुनायें हाल-ए-दिल कहने को हम तरस गये

○○○

रहीम का यह दोहा

कौन सुनेगा मेरी कहानी किससे कहूँ मैं अपनी कहानी
किसको कहूँ इस दुनिया में अपना, मेरे लिये सारी दुनिया वीरानी
यूँ भी कोई न कोई कहानी होती है सबके जीवन में
कोई ख़ुशी की और कोई ग़म की बातें होती हैं हर जीवन में
किसी के लिये अपने ग़म बड़े किसी के लिये सारी दुनिया अपनी
कोई सुने दूसरों की कहानी किसी को बात सिर्फ़ अपरी सुनानी
कोई करता रहता ज़िन्दगी भर किसी अपने का इन्तज़ार
किसी को मिल जाता है ज़िन्दगी का सुकून एक हमदर्द राज़दार
मन को समझा लिया है मैंने
सुख चाहे हों सबके अलग दुख सबके एक से होंगे
अपने समान ही दूसरों के दुख को हम अपना समझेंगे
तभी कहा मीराबाई ने 'घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय'
क्या कहूँ अपनी कहानी, क्यों कहूँ अपनी ज़बानी
बात निकलेगी तो बहुत दूर तलक जायेगी
तो क्यों अपने मुँह से बात निकाल कर छोड़ूँ कोई निशानी
समझ लिया मैंने रहीम जी का दोहा
जिसने शान्ति और सुबुद्धि देकर मेरा मन मोहा
'रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय
सुनि इठिलइहैं लोग सब बाँट न लइहै कोय'
जीवन की कितनी बड़ी सच्चाई छिपी है इसमें
कितनी बड़ी सीख निहित है इस अमर दोहे में
अपनी दर्द भरी कहानियाँ दिल के पन्नों पर लिख लें, छिपा लें
छुपाई हुई सारी घटनाएँ सुबुद्धि की स्याही से मिलाते चलें
पन्नों पर फेरी हुई स्याही, आपके दिल में उजाले भर देगी
भविष्य के लिये आपके जीवन को पुराने दर्दों से मुक्त कर देगी

ooo

एक निर्जीव सड़क

जी हाँ मैं सड़क हूँ
लोग कहते हैं बड़ी चलती हुई सड़क है
पर मैं कहाँ चलती हूँ चलते तो लोग हैं
कोई राह भूला हुआ पूछता है, 'यह सड़क कहाँ जाती है?'
अब बताओ मैं कहाँ जाऊँगी, यहीं जमी रहूँगी, जाओगे तो तुम
पर मैं इतनी जड़ भी नहीं हूँ कि महसूस न कर सकूँ
सुनोगे मेरी कहानी मेरी ही ज़बानी
मेरा जन्म कब हुआ, कैसे हुआ आदि
सब बताने में कहानी लम्बी हो जायेगी
संक्षेप में यह है कि एक दिन लोगों ने देखा
एक सुन्दर सड़क का जन्म हुआ बहुत शीघ्रता से सड़क बन गई
माँ धरती की खुदाई हुई पत्थर डाले गये
कूट-कूट कर उन्हें सम किया गया
जलते तारकोल से मेरे लम्बे मुँह को काला किया गया
हाँ वो टनों भारी रोलर भी चला
इस तरह सड़क बनकर, सबकी मित्र बनकर
मैं शीघ्र ही चलती हुई सड़क कहलाने लगी
बच्चे, बूढ़े, जवान, छोटे, लम्बे, मोटे पहलवान
मेरी छाती पर चलना सबको अच्छा लगता है
साइकिल, रिक्शा, दो पहिये, चौ पहिये स्कूटर, कार, बस, ट्रैक्टर
अच्छा लगता है जब जुलूस निकलते हैं हाथी, घोड़े, रथों के साथ
कोई सजी गाय लिये आता है, कोई मनचला साज़ बजाता जाता है
शादियों का नज़ारा क्या कहना औरत मर्द अपनी पूरी साज-सज्जा में
नाचते गाते दूल्हे के साथ जा रहे हैं
कल सुबह लौटेंगे इसी सड़क पर नई नवेली दुल्हन के साथ
इसी तरह आती रहेगी कोई न कोई बारात

सबकुछ बड़ा अच्छा लगता है मैं ख़ुशी और ग़म दोनों को
दिल से महसूस कर सकती हूँ, मेरी छाती फट जाती है
जब कोई दुर्घटना हो जाती है
मेरी छाती पर ख़ून से लथपथ लाश पड़ी है
यह वही है जिसे माँ-बाप ने ख़ून से सींच-सींच कर पाला था
जिस पर सबकी उम्मीदें गड़ी थीं
पलक की झपक में उनसे दूर चला गया
मैं धरती माँ की बेटी कुछ न कर पाई
या जब कोई अर्थी जाती है एक बेजान शरीर को लेकर
रोते हुए अपने जा रहे हैं श्मशान की ओर
और आत्मा कहीं और उड़ती जा रही है
मेरे सीने पर मेरी कितनी छोटी-बड़ी मासूम बेटियों के साथ
बलात्कार, अत्याचर होते हैं
सरेआम उनकी इज़्ज़त लुट जाती है
और मैं चुपचाप रोती हूँ, निर्जीव धरती हूँ न
कभी सड़क पर लड़ते लोग, एक दूसरे का सिर फोड़ते लोग
धर्म, ज़ात, भाषा के नाम पर जुलूस निकालते लोग
मुझ पर चलते हैं समाज और देश के नियम तोड़ते लोग
सड़क पर भीख माँगते बूढ़े, बच्चे, बीमार, अपंग माँ-बाप को
धोखे से मेरी छाती पर छोड़ जाने वाले आत्मा के अंश बच्चे
तब मुझे अपने निर्जीव होने पर पश्चाताप होता है
काश मैं इन सबकी ममद कर पाती
पर क्या करूँ मैं तो सिर्फ़ सड़क हूँ
एक निर्जीव सड़क

○○○

क़लम की आग

न जाने क्यों जब भी लिखने के लिये क़लम उठाती हूँ
ईश्वर, उसकी सृष्टि, प्रकृति, नदियाँ, पर्वत, जंगल, सागर,
आकाश, चंदा, सूरज, तारे, अम्बर से छलकती बादलों की गागर
इन सब पर लिखते-लिखते अचानक सोच बदलने लगती है
कुदरत के करिश्मों की जगह क़लम
वर्षा औ बर्फ़ के बदले आग उगलने लगती है
समाज के बदलते समीकरण, देश की राजनीति का दलदल
हर जगह ऐसे लोगों के जमघट हैं जो करते हैं सिर्फ़ छलबल
छोटे से छोटा काम करवाना भी कठिन हो गया है
सामने वाले की आँखों से लालच की
भूख झाँकती है, न सहानुभूति न दया है
आज फिर मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ दिमाग़ में घूमती हैं
कैसे सवा सेर गेहूँ उधार लेने का दण्ड पीढ़ियाँ भुगतती हैं
क्या करूँ, कैसे चुप रहूँ, प्रकृति के पेड़, पहाड़, सूरज, चाँद, तारे
इनके ऊपर लिखने के अलावा और भी ग़म हैं हमारे
कैसे प्रकृति में डूबी रहूँ जब मन में कुण्ठायें भर रहीं हैं
जब मेरे समाज और देश की अव्यवस्थायें
मेरे हृदय में घर कर रही हैं
अपने महान देश के करोड़ों लोगों के हालात
भर देते हैं मन में कुण्ठा, आक्रोश और ढेर से सवालात
क्यों महल बनाने वाले झोंपड़ों मे रहते हैं, बनवाने वाले महलों में
झोंपड़ों में भूख और मायूसी, दावतें, नृत्य, संगीत होते हैं महलों में
ग़रीबों के लिये घर बनते हैं काग़ज़ पर
अमीरों के महल पहुँच जाते हैं आसमानों पर
वोट लेकर राजा बनने वालों की नींद
कुम्भकर्ण से भी लम्बी होती है

कुम्भकर्ण तो छः महीने बाद जाग जाता था
इनकी नींद तो पाँच साल लम्बी होती है
जनता का पेट काट-काट कर दिया गया टैक्स का पैसा
कितना जमा हुआ सरकारी ख़ज़ाने में, शेष किसे ख़ज़ाने में बैठा
सरकारी ख़ज़ाने से भी कितना ख़र्च हुआ जब कार्यों पर
शेष कहाँ उड़ गया किस-किस के घर
पहुँच गया लगाकर पर
बिना दवाई के सड़कों पर मरते लोग
बिना दवाईयों के अस्पताल
पाँच सितारा अस्पतालों या विदेशों में इलाज करवाते
वी.आई.पी. या वी.वी.आई.पी. नये राजाओं का हाल
कैसे बतायें किसको समझायें देश का हाल
सरकारी कार्यालयों में एक काम करवाने में हज़ारों का ख़र्च
अन्यथा लग जायेंगे कई वर्ष
आगे बढ़ेगी ही नहीं फाइलों की गाड़ी
काम करवाने वालों की हो जायेगी सफ़ेद दाढ़ी
शिक्षा के नाम पर करोड़ों का ख़र्चा दिखाया जाता है
फिर भी जनता का बहुत बड़ा भाग आज भी अँगूठा लगाता है
अनपढ़ों का शोषण करने वाले हैं समाज में आज भी
जो कर्ज़ लेने को देते हैं कुछ और रक़म
अँगूठा लगवाते हैं किसी और रक़म पर
बँधुआ, बेगारी का शोषण चल रहा आज भी

पानी, बिजली की कमी, मँहगाई से जूझते मरते लोग
भुगत रहे हैं न जाने किन कर्मों के भोग
इन्हीं के पूर्वजों ने प्राण किये थे देश पर न्यौछावर

आज़ादी के संघर्ष में कूद पड़े थे छोड़कर घर-बार
रामराज्य की कल्पना का स्वप्न कितना असत्य सिद्ध हुआ
क्या रामराज्य कोरी कल्पना था
या हमारे नेताओं ने उसे ग़लत सिद्ध किया
समाज में बढ़ता हुआ धर्म, जाति, भाषा, ऊँच-नीच का भेदभाव
जनता में प्रेम, प्यार, एकता, संवेदना का अभाव
हो रहे हैं भयानक अत्याचार
मेरे हृदय में भरे हैं हज़ारों सवाल
मैं कैसे भूल जाऊँ अपने देश के
करोड़ों लोगों के दुखों और ग़मों को
कैसे डूबी रहूँ प्रकृति के करिश्मों में
अब तो क़लम चल पड़ी है दूसरी ओर
उसे डूबना पड़ रहा है आग उगलने में
जा रही है अपने देश को जागृत करने
जागृत करना है प्रत्येक नागरिक को
एक बार फिर ऊँचा उठाना है अपने देश को
अपनी क़लम की अग्नि में जलाने हैं दुष्कृत्य
मेरी क़लम लोगों को ले जायेगी करने को सुकृत्य
यही हैं मेरे प्रश्न, यही है मेरी क़लम का रहस्य
क्यों अचानक मेरी क़लम
आग उगलने लगती है

○○○

ज़िन्दगी कितनी अजीब होती है

यह ज़िन्दगी भी कितनी अजीब होती है
किसी की छोटी किसी की बड़ी होती है
छोटा और बड़ा होना तो ख़ुदा की मर्ज़ी
चाहे उसको करो कितने सजदे या भेजो अर्ज़ी
पर कभी-कभी हालात ऐसे बन जाते हैं
कि ज़िन्दगी की परिभाषा ही बदल जाती है
जिसकी ज़िन्दगी में सारे सुख होते हैं
उसके सपने बड़े ऊँचे-ऊँचे होते हैं
वह एक लम्बी उम्र जीना चाहता है
वह मौत का नाम भी नहीं सुनना चाहता है
वह मौत का ज़िक्र ज़बान पर भी नहीं लाता
दूसरी तरफ़ वो लोग होते हैं
जिनकी ज़िन्दगी की गाड़ी में पहिये नहीं होते
रुक-रुक कर घिसट-घिसट कर ज़िन्दगी हैं जीते
उनकी ज़िन्दगी इतनी लम्बी हो जाती है
कि एक-एक पल सदियों के बराबर हैं होते
सुख क्या होता है यह उन्हें पता नहीं होता
और तो और ज़िन्दगी की समस्याओं में उलझा
वह ख़ुद को भी भूला है होता
ज़िन्दगी ऐसे गुज़रती है कि भगवान के अलावा
कोई अपना पराया, दोस्त दुश्मन याद नहीं आता
लेकिन हालातों से समझौता करके
एक रोबोट की तरह करते रहते हैं सब काम
जैसे एक ज़िन्दा लाश चल रही है
अपने सारे काम तरतीब से कर रही है
मन मौत को बुलाता है

पर ज़िन्दगी लम्बी से लम्बी होती जाती है
यह ज़िन्दगी भी कितनी अजीब होती है
लेकिन कवि तो सिर्फ़ इतना कहना चाहता है
कि भगवान की दी ज़िन्दगी बड़ी क़ीमती है
कोशिश करो निराशाओं को आशाओं में बदलने की
नकारात्मक सोच को नकार दो, सकारात्मक सोच को अपना लो
भगवान भी उन्हीं की मदद करते हैं
जो अपनी मदद अपने आप करते हैं
अपनी ज़िन्दगी की गाड़ी के पहियों को रुकने मत दो
हर दुख में सुख खोजने की कोशिश करके देखो
क्योंकि अगर हम तनाव में रहेंगे तो तनाव बढ़ता जायेगा
अपने ऊपर क़ाबू पाने के तरीक़े ढूँढकर
हरा दो निराशाओं को, भुला दो तनाव को
ढूँढ लो रेगिस्तान में नख़लिस्तान
ढूँढ लो रेत के पहाड़ों की बीच मरुद्यान
एक दिन हार जायेंगे बुरे दिन ज़िन्दगी के
क्योंकि ज़िन्दगी बड़ी अजीब होती है
किसी की अमीर किसी की ग़रीब होती है
किसी की अपने से दूर किसी की अपने क़रीब होती हे
आओ बन्धु, हम अपनी ज़िन्दगी को अपने क़रीब ले आयें
क्यों कि कहीं हम ज़िन्दगी की सलीब पर न चढ़ जायें
क्योंकि ज़िन्दगी बड़ी अजीब होती है
वह तो यह भी कहती है 'ख़ुदा तो सबको देता है'
किसकी झोली में कितना आये यह उसका अपना नसीब होता है
यही ही जीवन का मंत्र-तंत्र, सही सोच का यंत्र
पहचानो, समझो, ज़िन्दगी कितनी अजीब होती है

ooo

छूट गया हाथों से दामन

कभी हमने चाहा था दिल से जिसे
वो अपना न जाने कहाँ खो गया
मन्नतें माँगा करते थे जिसके लिये
वो सपना न जाने कहाँ खो गया

कोई माने न माने है हमको पता
माँगने से तो जन्नत है मिलती नहीं
हमसे न जाने कैसी हुई है ख़ता
सपने मन्नत से पूरे तो होते नहीं

अपनी नादानियों का नतीजा मिला ये हमें
था जो अपना न जाने कहाँ सो गया
कभी हमने चाहा था दिल से जिसे
वो अपना न जाने कहाँ खो गया

पल भर में छूट गया हाथों से दामन
सूखा लगा कैसा अबकी ये सावन
पानी के ओले लगें आग के गोले से
याद आईं बातें कभी तुम जो बोले थे

बस एक ही बात रहती है मन में
कब आयेगा वो जो कभी था गया
कैसी ये आँसुओं की फ़सल बो गया
वो अपना न जाने कहाँ खो गया

○○○

वादे तोड़ते चलो

प्यार बाँटते चलो
नोट बाँटते चलो
वोट माँगते चलो
रोज़ चुनाव कराओ तुम
घर-घर-घर फिर जाओ तुम
हाथ जोड़ो सिर झुकाओ तुम
ख़ूब सारे करना वादे
पूरे करना बस अपने इरादे
लोग क्या समझें बेचारे सादे
ज्ञान दिखाते चलो
अज्ञान बढ़ाते चलो
अपने काम बनाते चलो
अज्ञानी जनता को जीतना आसान
उँगलियों पर नचाना भी आसान
उनका वोट मिलना आसान
बुरा करते रहो
भले बनते रहो
अपना ख़ज़ाना भरते रहो
अन्दर चाहे काले रहो
ऊपर से झक सफ़ेद रहो
बग़ल में छुरी रखो मुँह से राम कहो
पर्चे बाँटते चलो
अपनी प्रशंसा छापते चलो
दूसरों की बुराई छापते चलो
चुनाव जीतते चलो
वादे तोड़ते चलो
प्यार बाँटते चलो ○○○

ठोकर मिली ज़माने से

हमको सदा ठोकर मिली ज़माने से
कभी अपनों से मिली और कभी बेगाने से
ग़ैर की ठोकरें ग़ैर समझकर भूल गये
लेकिन अपनों ने तो ग़ैरों को भी दे दी मात
साहिल तक पहुँचाने का वादा थे कर गये
लेकिन बीच भँवर में छोड़ दिया हाथ
हाथ में हाथ डाल कर बड़े ग़ुरूर से चले थे
बीच राह में खींच लिया हाथ किसी बहाने से

जैसे-तैसे कट ही जायेगी ये ज़िन्दगी
पर विश्वासघात से पाये ज़ख़्म बड़े गहरे होते हैं
कैसे उनपर विश्वास कर पायेगी ज़िन्दगी
ये जो नक़ाब से ढके चेहरे होते हैं
अपने ज़ख़्मों का इलाज ख़ुद की करेगी ज़िन्दगी
क्या मिलेगा किसी को कुछ बताने से

ज़माना तो जो कहता है, कहकर मुकर जायेगा
हम न रहेंगे ज़माना तो यहीं ठहर जायेगा
जो बिगड़ चुका वह कहाँ तक सँवर पायेगा
क्या बनेगा किसी को कुछ सुनाने से
हमको सदा ठोकर मिली ज़माने से
कभी अपनों से मिली और कभी बेगाने से

○○○

मेरी गौरैया आ.. आ.. आ..

नन्ही गौरैया आ.. आ.. आ..
सोन चिरैया दाना खा
कहाँ गई मेरी वो गौरैया
मुझे बताती नहीं है भैया
शायद माँ को भी पता नहीं
पुस्तक में भी लिखा नहीं
कैसे पता लगाऊँ उसका
रोज़ ही नाम पुकारूँ उसका
नित-नित आँगन में आती थी
चुन-चुन कर दाना खाती थी
नन्ही-सी मेरी गौरैया
मैं कहता आ सोन-चिरैया
कभी कुदक कर इधर को आती
कभी फुदक कर उधर को जाती
मैं जी भर कर उसे देखता
रोज़ था दाना-पानी देता
मुझे मित्र-सी वो लगती थीं
चूँ-चूँ-चूँ-चूँ कुछ कहती थीं
बिना कहे तुम गईं कहाँ
बिना बताये रहीं कहाँ
सूना पड़ा घोंसला तुम्हारा
बाहर पेड़ पर जो था बनाया
राह तुम्हारी ताक रहा
बहुत समय है बीत रहा
मेरी गौरैया आ.. आ.. आ..
माँ की घरेलू चिड़िया अब तो आ.. आ.. आ.. ○○○

बादल बिजली आये संग-संग

कड़की बिजली गरजे बादल, मैंने खोला दरवाज़ा
देखा बादल ढम-ढम-ढम-ढम बजा रहे थे बाजा
बिजली रानी चम-चम करके दिखा रहीं थीं नाच
कभी करें ऐसी आवाज़ें जैसे टूटा काँच
सूरज दादा भाग गये बादल ने उन्हें भगाया
राज ख़तम कर सूरज जी का अपना राज जमाया

रात हुई चंदा मामा ने अपना रूप दिखाया
नीचे से बादलों ने उनको अपने बीच छिपाया
ओढ़ चुनरिया बादल की मामा शरमा कर भागे
आगे-आगे चंदा जी और पीछे तारे भागे
धरती को काले बादल ने अपना रंग दिखाया
सरसा कर धरती माता को रंग-बिरंग बनाया

रिमझिम-रिमझिम बरसे बादल छम-छम नाच दिखाया
डाल के झूले लोगों ने भी झूल के गाना गाया
बादल-सूरज की नोकझोंक में इन्द्रधनुष भी आया
सतरंगी कमान तान कर लोगों को हर्षाया
बादल बिजली आये संग-संग लेकर गाजा बाजा
ज़ोर-ज़ोर से ढम-ढम-ढम-ढम बजा रहे थे बाजा

ooo

बेरंग हैं नज़ारे

तुम क्या गये कि ज़िन्दगी के सब रंग बह गये
इस भीड़ भरी दुनिया में हम अकेले रह गये

हमने तो सभी कुछ छोड़ा पर दुनिया ने हमें न छोड़ा
इस अकेली जान के लिये हज़ारों झमेले रह गये

किसको यहाँ सुनायें हम ज़िन्दगी के ग़म
जो ग़म भरे थे दिल में चुपचाप सह गये

सपनों में कितने ऊँचे हमने महल बनाये
पर पत्ते ताश के थे इक साथ ढह गये

ताक़त इस जीभ की भी गई साथ में तुम्हारे
बिन बोले दास्तान-ए-दर्द ख़ुद से कह गये

बेरंग ज़िन्दगी है बेरंग हैं नज़ारे
नमकीन आँसू आँखों से चुपचाप बह गये

तुम क्या गये कि दुनिया के नज़ारे चले गये
इस भीड़ भरी दुनिया में हम अकेले रह गये

○○○

हम दिल के अमीर हैं

ठुकरा दिया किसी ने दिल को ग़रीब के
ठोकर लगाई ऐसी कि भेजा रक़ीब[1] के
मिला ख़ुद से ख़ुद को धोखा, खेले नसीब के
शायद वो अब न तोड़े कभी दिल को ग़रीब के
कुछ ज़ख़्म ऐसे हैं जो कभी देख पाओगे
वो ज़ख़्म जो हमारे दिल में असीर[2] हैं
कर डाले ख़ुद ही टुकड़े अपने ज़मीर के
लूटेगा कैसे दौलत कोई घर से फ़क़ीर के
दौलत का लालच कुछ भी हमको नहीं ऐ दोस्त
तुम कुछ भी हमको समझो हम दिल के कबीर[3] हैं
जो दिल में होता है बस कह देते हैं वही
कोई न समझे कहते हम ख़ुद को नज़ीर[4] हैं
अपनों से परायों से ख़ुद से भी खाये धोखे
पर दोस्त हम तो फिर भी दिल के अमीर हैं
हम आम आदमी हैं हमको वही समझना
कोई न कहना ख़ुद को हम समझें बसीर[5] हैं

○○○

1. प्रतिद्वन्द्वी, 2. छुपे, 3. नेक, महान, 4. उदाहरण, 5. संत, बुद्धिमान

हमको प्रेम का दीप जलाना है

प्रेम ही मन्दिर प्रेम ही मस्जिद प्रेम ही गुरुद्वारा है
प्रेम से जग के अगर जीत लें सारा जहाँ हमारा है
मन ही मन्दिर मन ही मस्जिद मन ही गुरुद्वारा है
धर्म है सबके मन के अन्दर धर्म सभी को प्यारा है
धर्म है जब अपने मन में जिस पर श्रद्धा हो पूजो उसे
सबको अपना मन है प्यारा यही हमेशा कहो ख़ुद से
देवता जब मन के अन्दर फिर क्यों आपस में अलगाव है
मन मन्दिर में करो पूजा ये आपस में क्यों दुराव है

प्रेम से आपस में रह लो धर्म सभी का अपना है
पूजा करो अपने ईश्वर की नाम उसी का जपना है
धर्म कोई भी नहीं सिखाता करना हमको बैर है
सभी धर्म कहते हैं अपने सब, कोई न ग़ैर है
ईश पर चढ़ने वाले पुष्प फल किस धर्म वाले ने उगाये हैं
किसके घर फले फूले और किसके घर से आये हैं
कभी पूछा किसी जीव जन्तु से किस धर्म में पैदा हुआ है
खाना किस धर्म का खाया किस धर्म को वो मानते हैं
हैं वही इन्सान सच्चे जो सबको अपना मानते हैं
आओ हर इन्सान को हमने प्रेम का गीत सुनाया है
आओ हर इन्सान के मन में प्रेम का दीप जलाना है
प्रेम से जग को अगर जीत लें सारा जहाँ हमारा है

○○○

सबको एक तार में पिरोया

मैंने अपने काव्य में सबको एक तार में पिरोया
और कहीं कुछ नहीं जानती क्या पाया क्या खोया
क्यों हैं सब आपस में लड़ते इक दूजे से क्यों हैं डरते
तीखी तीती बातें कहते क्यों अन्याय करते और सहते
क्यों इक दूजे को रुलाते
क्यों मुख को आँसू से धोया

ज़ात-पात और धर्म पे लड़ते, भाषावार राज्य हैं बनते, फिर भी लड़ते
देश के टुकड़े क्यों हैं करते भारत अखंड, क्यों खंडित करते
ऊँच-नीच और छुआछूत में देश ने कितना कुछ है खोया
कहीं आतंक कहीं भ्रष्टाचार है, कहीं अपहरण, बलात्कार है
चोरी रिश्वतखोरी बढ़ी है मँहगाई आकाश चढ़ी है
देश का ऐसा हाल देखकर
मेरा मन है कितना रोया
कितने प्रश्न उठ रहे दिल में
क्या उत्तर मिल जायेंगे इनके
कविताओं में जो भी चाहा
क्या पूरा वो हो पायेगा
मैंने तो बस इतना चाहा
टूटे न भारत की मोती माला
यही सोचकर बहुत बार
आँखों ने आँचल को है भिगोया
मैंने अपने काव्य में सबको
एक तार में पिरोया
और कहीं कुछ नहीं जानती
क्या पाया क्या खोया

ooo

अन्तिम दरवाज़ा

जीवन में सफलता पाने की कामना सबको होती है
जीवन में अपना लक्ष्य पाने की भावना सबमें होती है
किन्तु सफलता की सीढ़ियाँ इतनी आसान नहीं होती हैं
उनमें चढ़ाई के साथ-साथ ढलान भी होती है

सफलता की सीढ़ियों पर गुलाब के फूल बिछे होते हैं
जिनमें फूलों के साथ काँटे भी छिपे होते हैं
सफलता और असफलता दोनों साथ-साथ चलती हैं
सफलता के मार्ग में अनेक असफलतायें आती रहती हैं
किन्तु असफलता सफलता के मार्ग में बाधक नहीं होती
अपितु एक असफलता के आगे सफलता दो पग है भरती
ठोकरें मानव के प्रयासों को बढ़ाने का काम निरन्तर हैं करतीं
असफलतायें ही सफलताओं की ओर अग्रसर हैं करतीं

मार्ग में जितनी ठोकरें मिलती हैं, इरादे उतने की पक्के होते हैं
ठोकरों से राह में रुक जाने वाले जीवन भर रोते हैं
वे जीवन में लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को खो देते हैं
जो अपनी सम्पूर्ण इच्छाशक्ति और आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ते हैं
वे ही बाधाओं को जीतकर अपनी मंज़िल की अन्तिम सीढ़ी चढते हैं
जिस चीज़ को पाने के लिये हम अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं
उसमें परमात्मा भी हमारी सहायता करने के लिये आ जाते हैं
जीवन में केवल एक लक्ष्य प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं होती
सफलता एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन भर है चलती रहती
हम बाधाओं को धैर्य से पार करें अपेक्षित सफलता तभी मिलती है
अंतहीन प्रयासों से ही अन्तिम दरवाज़ा खुलता है
तभी अन्तिम दरवाज़े की चाबी मिलती है

○○○

धरती पर आकर वो कूदीं

जाने वो कहाँ से आईं थीं, जाने वो कहाँ को जाती थीं
अम्बर में थीं वो घूम रहीं,
बादल की गोदी में बैठी ख़ूब मचाती धूम रहीं
स्वच्छन्द गगन में विचर रहीं, उस समय यहाँ से गुज़र रहीं
फिर जाने क्या मन में आया
धरती पर उनको क्या भाया
धरती पर आकर वो कूदीं, हमने बोला आईं बूँदीं
कुछ देर ज़रा टप-टप ही पड़ीं
फिर तो बस लग गई झड़ी
हमने पूछा बूँदी-बूँदी, नभ से धरती पर क्यों कूदीं?
बोलीं मैं दूर से आई हूँ
उपहार तुम्हारा लाई हूँ
तुम बहुत प्रेम मुझसे करते, इसलिये कूदकर अम्बर से
सागर से जल के घर लाई हूँ
मैं तुमसे मिलने आई हूँ
मैं बहुत-सा जल बरसाऊँगी, प्यासी धरती सरसाऊँगी
नहरें, तालाब, कुँए, नदियाँ, मैं सब में जल भर जाऊँगी
अपनी फ़सलों को उगाना तुम
हरियाली ख़ूब लगाना तुम
धरती का स्वर्ग बनाना तुम
इसलिये यहाँ मैं आई थी, अगले वर्ष फिर आऊँगी
अब वहीं जहाँ से आई थी, वापिस अपने घर जाऊँगी

ooo

दिलबोले रिश्ते

कभी-कभी कुछ रिश्ते अनाम होते हुए भी
दिल के कितने क़रीब हो जाते हैं
वे चाहें हों किसी भी रूप में
पड़ोसी आँटी, दादी, नानी, बुआ, मौसी, चाची, ताई
चाचा, मामा, ताऊ, पड़ोस वाले अंकल, दोस्त या भाई के रूप में
क्योंकि ये रिश्ते ख़ून के नहीं होते
ये कहलाते हैं मुँहबोले रिश्ते
किन्तु ये रिश्ते वास्तव में होते हैं
न मुँहबोले, न दिमाग़बोले
ये तो दिलबोले रिश्ते होते हैं
जो रक्त से जुड़े न होने पर भी
दिल के दिल से जुड़े तारों के होते हैं
प्रायः दिल से जुड़े ये तार
ख़ून के तारों से अधिक दृढ़ होते हैं
क्योंकि ये किन्हीं रस्मों से या ख़ानदानी रिश्तों की विवशता से नहीं
अपितु पारस्परिक स्नेह, विश्वास और
कभी-कभी ज़िम्मेदारी समझकर जुड़ जाते हैं
कब प्रेम, विश्वास, संवेदन जाग उठता है, पता ही नहीं चलता
दो बिछड़ी हुई आत्मायें न जाने कहाँ-कहाँ से आकर
कहाँ पर मिल जाती हैं
एक अनोखे रिश्ते में जुड़ जाती हैं
वक़्त साथ दे तो ये रिश्ते अन्त तक चलते हैं
क्योंकि इनके बीच धन-दौलत, चल-अचल सम्पत्ति
हीरे-जवाहरात के बँटवारे का लालच, स्वार्थ नहीं बँटता
बल्कि ये दिलबोले रिश्ते परस्पर प्रेम और विश्वास बाँटते हैं

○○○

- प्रकाशित कृतियाँ -

गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

मैं और मेरी ज़िन्दगी
विमला रावर सक्सेना

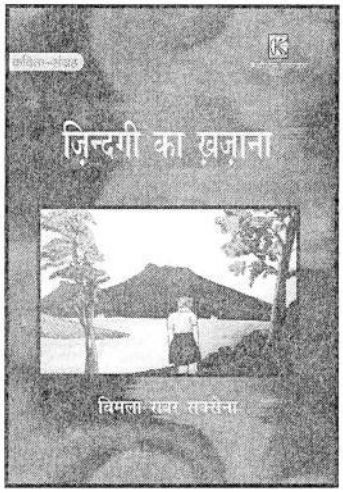
ज़िन्दगी का ख़ज़ाना
विमला रावर सक्सेना

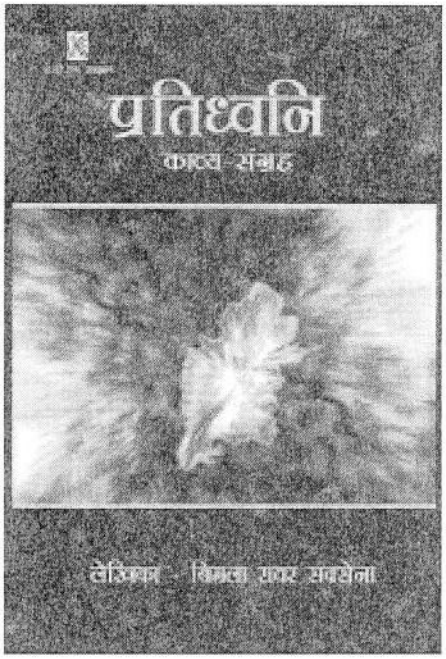
प्रतिध्वनि
काव्य संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

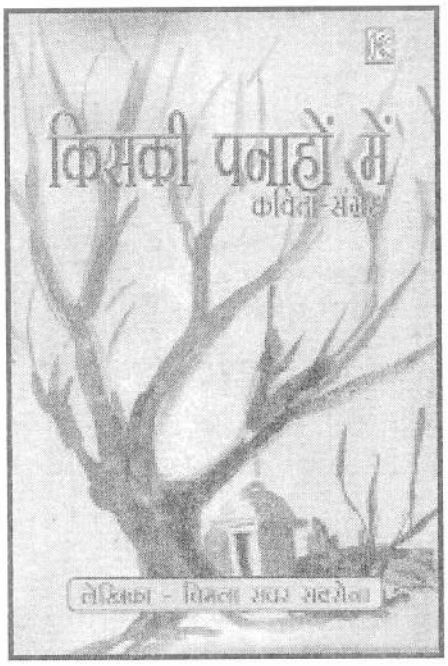
किसकी पनाहों में
कविता-संग्रह
लेखिका - बिमला रावत सक्सेना

जिन्दगी और भुरभुरे
बिमला रावत सक्सेना

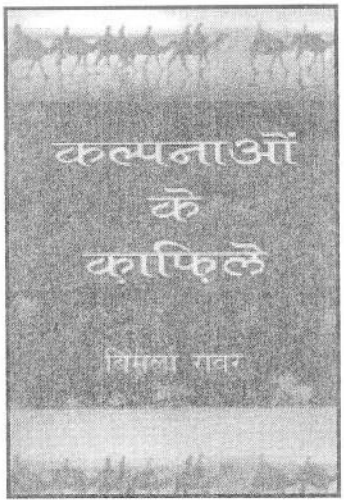
कल्पनाओं
के
क्राफिले
बिमला रावत

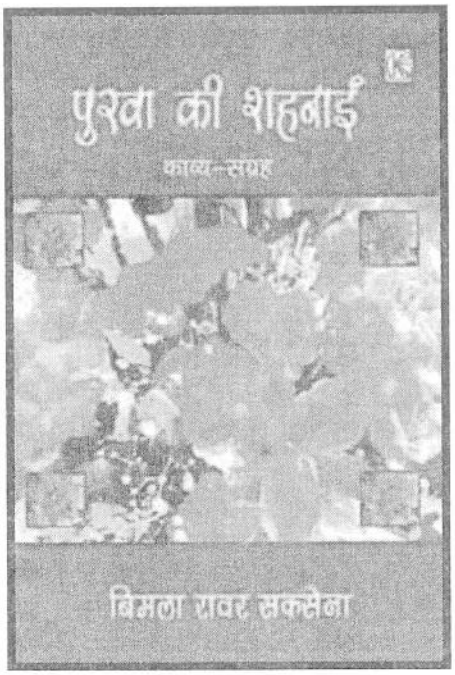
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावत सक्सेना

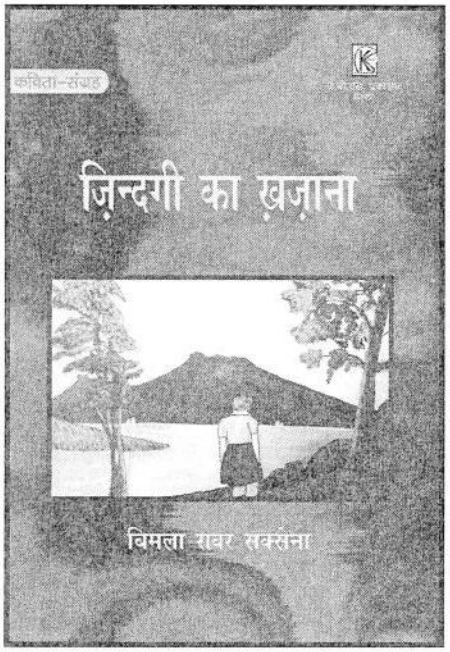
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी का ख़ज़ाना
बिमला रावर सक्सेना

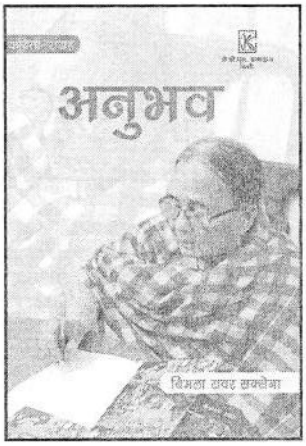
अनुभव
बिमला रावर सक्सेना

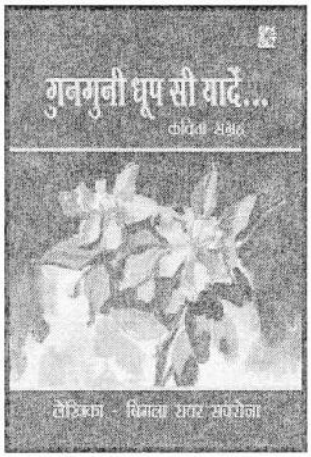
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

कविता-संग्रह
मैं और मेरी ज़िन्दगी
बिमला रावर सक्सेना

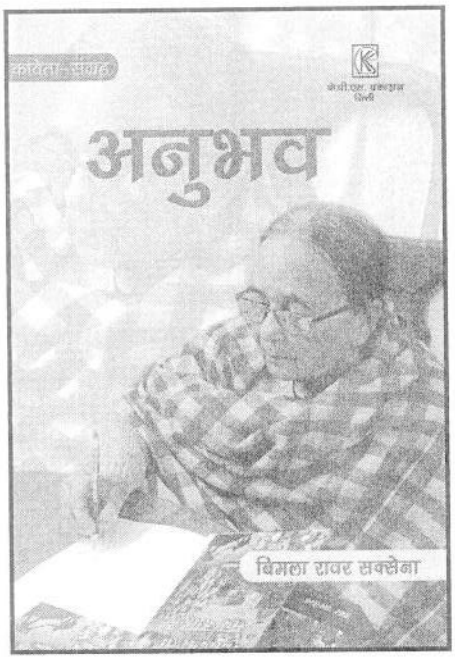
कविता-संग्रह
अनुभव
बिमला रावर सक्सेना

बिमला रावर सक्सेना

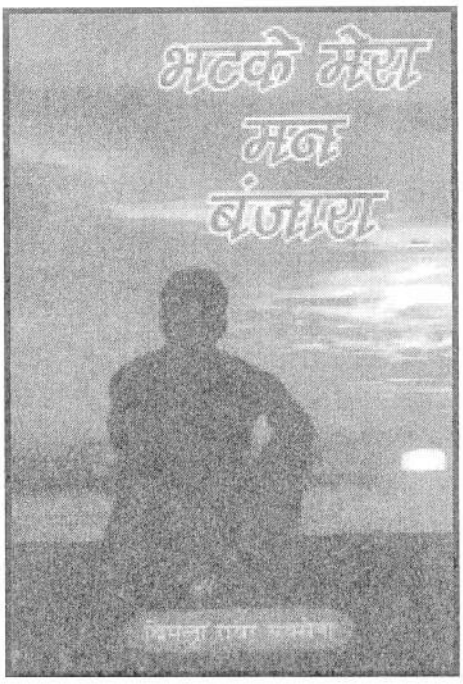
भटके मेरे मन बंजारे